Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 203 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 01 फरवरी 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जैन धर्म का मूल विस्तार यह है कि वह प्रत्येक आत्माओं को परमात्मा बनाने की क्षमता को बताता है।

The fundamental of jainism is that it explains every soul's capability to become god.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

सोनिया गांधी ने राष्ट्रपति को 'बेचारी' कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण पर कांग्रेस नेताओं की टिप्पणी पर विवाद हो गया। सोनिया गांधी ने द्रौपदी मुर्मू के लिए बेचारी शब्द इस्तेमाल किया। वहीं राहुल ने भाषण को बोरिंग बताया। भाजपा ने इसे आदिवासी समाज का अपमान बताया और माफी की मांग की। प्रधानमंत्री मोदी ने भी कहा कि राष्ट्रपति के लिए ऐसे बयान गरीबों और आदिवासियों का अपमान है। वहीं राष्ट्रपति भवन के प्रेस सेक्रेटरी ने भी सोनिया गांधी के बयान पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा- विपक्षी सांसदों का बयान दुर्भाग्यपूर्ण और राष्ट्रपति की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाला है।

केजरीवाल के सात विधायकों का इस्तीफा, पार्टी भी छोड़ी

दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव से 5 दिन पहले आम आदमी पार्टी के 7 मौजूदा विधायकों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। इन सभी ने विधानसभा चुनाव में टिकट न मिलने और कुछ में भ्रष्टाचार को इस्तीफे की वजह बताई। महरौली से 2 बार के पार्टी विधायक नरेश यादव ने कहा, 'आप' का उदय भ्रष्टाचार के खिलाफ हुए अन्ना आंदोलन से भारतीय राजनीति से भ्रष्टाचार को मुक्त करने के लिए हुआ था। लेकिन अब मैं बहुत दुखी हूं कि भ्रष्टाचार आम आदमी पार्टी बिल्कुल भी कम नहीं कर पाई, बल्कि 'आप' ही भ्रष्टाचार के दलदल में लिप्त हो चुकी है।

गुणवत्ताहीन शिक्षा के मामले में दो शिक्षकों को नोटिस, दो निलंबित

रायपुर (विसं)। शिक्षा सचिव श्री परदेशी ने आज गरियाबंद जिले के पूर्व माध्यमिक शाला बारूका एवं मालगांव के निरीक्षण के दौरान कक्षा 8वीं के छात्रों के अधिगम स्तर में भारी गिरावट और विद्यार्थियों की विषयगत समझ अत्यंत कमजोर पाए जाने पर नाराजगी जताई। उन्होंने प्रधान पाठक ललित कुमार साहू और संकुल समन्वयक श्री भूपेन्द्र सिंह ठाकुर को पूर्ण रूप से उत्तरदायी मानते हुए उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित करने के निर्देश दिए।

राष्ट्रपति मुर्मू के भाषण में आर्टिकल 370 से लेकर डिजिटल फ्रॉड तक, एक राष्ट्र एक चुनाव का किया जिक्र

राष्ट्र प्रथम की भावना से आगे बढ़ रही मोदी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण के साथ ही संसद का बजट सत्र आज से शुरू हो गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए केंद्र सरकार के कामों को गिनाया। साथ ही 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' और वक्फ संशोधन जैसे विधेयक का जिक्र किया।

राष्ट्रपति मुर्मू के अभिभाषण से जुड़ी 10 बड़ी बातों पर नजर डालते हैं।

राष्ट्रपति मुर्मू ने 'सबका साथ, सबका विकास' का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि मेरी सरकार का मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास है और इसी पर हम काम कर रहे हैं। राष्ट्र प्रथम की भावना से सरकार आगे बढ़ रही है। अनुच्छेद 370 हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में विकास का वातावरण हुआ है।

उन्होंने देश के बुनियादी ढांचे के बढ़े बजट का जिक्र किया। संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, हमारा एक ही लक्ष्य है, विकसित भारत बनना। 10

साल में बुनियादी ढांचे का बजट पांच गुना बढ़ा है।

राष्ट्रपति ने भारत में टेक्नोलॉजी पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, दुनिया के विकसित देश भी भारत की यूपीआई लेनदेन प्रणाली की सफलता से प्रभावित हैं। भारत टेक्नोलॉजी का ग्लोबल प्लेयर है, यहां डिजी लॉकर और यूपीआई जैसी सेवाएं हैं।

उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, आज हमारे युवा स्टार्टअप से लेकर खेल और अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में देश का नाम रोशन कर रहे हैं। भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और प्रौद्योगिकी अपनाने के क्षेत्र में दुनिया को रास्ता दिखा रहा है। डिजिटल टेक्नोलॉजी, स्टार्टअप, इनोवेशन में भारत आगे है।

भारत में गरीबी को मात देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम की तारीफ की। राष्ट्रपति ने कहा, गरीब को गरिमापूर्ण जीवन मिले, इसके लिए हम प्रयासरत हैं। देश के 25 करोड़ लोग गरीबी को परास्त कर आज अपने जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। हमने न्यू मिडिल क्लास का ऐसा प्लेटफॉर्म तैयार किया जो नई ऊर्जा से भर रहा है।

राष्ट्रपति ने आठवें वेतन आयोग के गठन की तैयारी को भी सराहा। उन्होंने कहा कि सरकारी कर्मचारियों के सम्मान के लिए आठवें वेतन आयोग के गठन का निर्णय लिया है। केंद्र सरकार के लाखों कर्मचारियों के यूनिफाइड पेंशन के तहत 50 फीसदी निश्चित पेंशन देने का फैसला लिया गया है।

आर्थिक सर्वेक्षण : वित्त वर्ष 2026 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर

6.3-6.8 फीसदी रहेगी : सीतारमण

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण लोकसभा ने और राज्यसभा में आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 पेश किया। सदन की। कार्यवाही कल तक के लिए स्थगित कर दी गई। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, विकास के उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए, वित्त वर्ष 2026 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि 6.3 से 6.8 प्रतिशत के बीच रहने की उम्मीद है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को लोकसभा में आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 पेश किया। आर्थिक सर्वेक्षण एक वार्षिक दस्तावेज है जिसे सरकार द्वारा केंद्रीय बजट से पहले अर्थव्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

यह दस्तावेज अर्थव्यवस्था की अल्पावधि से मध्यम अवधि की संभावनाओं को सामने लाता है। आर्थिक सर्वेक्षण मुख्य आर्थिक सलाहकार की देखरेख में वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग के आर्थिक प्रभाग की ओर से तैयार किया जाता है। पहला आर्थिक सर्वेक्षण 1950-51 में अस्तित्व में आया था, जब यह बजट दस्तावेजों का हिस्सा हुआ करता था।

1960 के दशक में इसे केन्द्रीय बजट से अलग कर दिया गया और बजट प्रस्तुत होने से एक दिन पहले इसे पेश किया गया। वित्त मंत्री शनिवार को वर्ष 2025-26 के लिए केंद्रीय बजट पेश करेंगी। पीएम मोदी ने कहा, मैं प्रार्थना करता हूं कि मां लक्ष्मी हमारे देश के गरीब और मध्यम वर्ग पर अपनी कृपा बनाए रखें। यह बहुत गर्व की बात है कि भारत ने एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में 75 साल पूरे किए हैं। भारत ने खुद को वैश्विक स्तर पर अच्छी तरह से स्थापित किया है।

सर्वेक्षण में आगे कहा गया है कि कमजोर वैश्विक मांग और घरेलू मौसमी परिस्थितियों के कारण विनिर्माण क्षेत्र को दबाव का सामना करना पड़ा।

2047 पर फोकस, संसद में कई बिलों पर चर्चा : मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण के साथ 18वीं लोकसभा के बजट सत्र का आगाज हो गया है। बजट सत्र शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मीडिया को संबोधित करते हुए मां लक्ष्मी को नमन किया। साथ ही उन्होंने सरकार के तीसरे टर्म के बारे में जानकारी दी। पीएम मोदी के भाषण की 10 बड़ी बातों पर नजर डालते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मां लक्ष्मी को नमन कर संबोधन की शुरुआत की। उन्होंने कहा, आज बजट सत्र की शुरुआत में मैं समृद्धि की देवी मां लक्ष्मी को नमन करता हूं। सदियों से हम ऐसे अवसरों पर मां लक्ष्मी को याद करते आ रहे हैं। मैं महालक्ष्मी से प्रार्थना करता हूं कि देश के हर गरीब और मध्यम वर्ग पर मां लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहे।

पीएम मोदी ने इसे 2047 के संकल्प का विजन बताया। बोले, हमारे गणतंत्र ने 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं। यह देश के प्रत्येक नागरिक के लिए बहुत गर्व की बात है। इस देश की जनता ने मुझे तीसरी बार जिम्मेदारी दी है। यह मेरे तीसरे कार्यकाल का पूर्ण बजट है।

कांग्रेस के शाही परिवार ने राष्ट्रपति का अपमान किया : पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज द्वारका में रैली की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के शाही परिवार का अहंकार देश ने फिर देखा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद को संबोधित किया। उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, लेकिन उन्होंने बेहतरीन भाषण दिया, लेकिन कांग्रेस का शाही परिवार उनके अपमान पर उतर आया है। राष्ट्रपति ओडिशा आदिवासी परिवार से निकलकर यहां तक पहुंची हैं। ये देश के 10 करोड़ आदिवासियों का अपमान है। जो जमीन से उठकर ऊपर आते हैं, उनको कांग्रेस का शाही परिवार पसंद नहीं करता। गरीब, दलित, आदिवासी और ओबीसी समाज से जो भी लोग आगे बढ़ते हैं, कांग्रेस उनको अपमानित करती है।

हमारी नीति स्पष्ट है-बोली का जवाब बोली से और गोली का जवाब गोली से : साय

नक्सलियों द्वारा किये जा रहे आत्मसमर्पण पर मुख्यमंत्री ने सुरक्षाबल के जवानों को दी बधाई

रायपुर (विश्व परिवार)। हमारी नीति स्पष्ट है - बोली का जवाब बोली से और गोली का जवाब गोली से। जो भी नक्सली आत्मसमर्पण कर समाज की मुख्यधारा में लौटना चाहते हैं, उनके लिए हमारी सरकार द्वारा बेहतर जीवन और पुनर्वास की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जो हिंसा का रास्ता छोड़ गणतंत्र का मार्ग अपनाते हैं, उनका स्वागत है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बस्तर संभाग के अलग-अलग जिलों में लगातार नक्सलियों द्वारा किये जा रहे आत्मसमर्पण पर सुरक्षाबल के जवानों को बधाई देते हुए, उनके अदम्य साहस को नमन करते हुए कहा कि - आज कांकेर जिले में 7 माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया है, जिन पर कुल 32 लाख रुपए का इनाम घोषित था। इससे पहले नारायणपुर जिले के 27 एवं सुकमा जिले के 52 लाख के ईनामी 9 नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के समक्ष आत्मसमर्पण किया है। यह हमारी सरकार की प्रभावी आत्मसमर्पण नीति और नक्सलवाद के सफाए के लिए लगातार चलाए जा रहे अभियानों का प्रत्यक्ष परिणाम है।

सचिन तेंदुलकर को मिलेगा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

मुंबई (एजेंसी)। BCC सचिन तेंदुलकर को लाइफ टाइम अवॉर्ड देने जा रहा है। तेंदुलकर को यह अवॉर्ड शनिवार, 1 फरवरी को BCCI के हेड ऑफिस में वार्षिक समारोह में दिया जाएगा। बोर्ड के एक अधिकारी ने PTI से इस बात की पुष्टी की है। उसने कहा- हां, उन्हें (सचिन तेंदुलकर) सीके नाइडू लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड दिया जाएगा।

51 साल के तेंदुलकर यह अवॉर्ड हासिल करने वाले 31वें क्रिकेटर होंगे। उनके अलावा तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को 2023-24 के बेस्ट इंटरनेशनल क्रिकेटर के लिए BCCI पॉली उमरीगर अवॉर्ड देगा। जबकि स्मृति मंधाना ने महिला वर्ग में यह पुरस्कार जीता है।

शशांक सिंह आज होंगे ऑलराउंडर प्लेयर ऑफ द ईयर अवॉर्ड से सम्मानित

रायपुर (विसं)। 1 फरवरी को मुंबई में बीसीसीआई के द्वारा आयोजित होने वाले पुरस्कार समारोह में छत्तीसगढ़ के पहले क्रिकेटर शशांक सिंह को लाला अमरनाथ अवार्ड फॉर द बेस्ट आलराउंडर इन डोमेस्टिक लिमिटेड ओवर्स कम्पटीशन 2023-24 पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। शशांक को यह अवॉर्ड बीसीसीआई के घरेलू सीमित ओवर के टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रदान किया जा रहा है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रथम समाधि स्मृति महामहोत्सव 01 से 06 फरवरी 2025 तक डोंगरगढ़ में

6 फरवरी को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह व मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भाग लेंगे

मुनि श्री समता सागर, पवित्र सागर, आगम सागर, पुनीत सागर एवं माताजी संघों की गरिमामयी सानिध्य

डोंगरगढ़ चंद्रगिरी तीर्थ (छत्तीसगढ़)। संत शिरोमणि, समाधि सम्राट आचार्य 108 विद्यासागर जी महाराज का प्रथम समाधि स्मृति महामहोत्सव डोंगरगढ़ में आगामी 1 से 6 फरवरी तक उनके समाधि स्थल पर श्री 1008 सिद्ध चक्र महामंडल विधान के साथ आयोजित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री ने अपने तपस्वी जीवन के शिखर पर स्वयं ही संलेखनापूर्वक समाधिमरण रूपी कलशारोहण कर के जीवन को कैसे जीना और कैसे उपसंहार करना सिखा दिया था और छत्तीसगढ़ के इस तीर्थ क्षेत्र चंद्रगिरी डोंगरगढ़ में समाधिस्थ हो गए थे। इसी स्थान पर समाधि स्मारक का भव्य निर्माण किया जाना है।

तिथि अनुसार 6 फरवरी को यहां मुख्य समाधि स्मृति महा महोत्सव संपन्न होगा। कार्यक्रम के विस्तृत विवरण अनुसार 1 फरवरी से 6 फरवरी तक श्री 1008 सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आचार्य श्री के अष्टधात्वीय 108 चरण चिन्ह की प्रतिष्ठापना एवं वृक्षारोपण का आयोजन किया जा रहा है।

आयोजन हेतु नवाचार्य विद्यानिधि श्री 108 समय सागर जी महाराज ससंघ का आशीर्वाद प्राप्त है। छह दिवसीय महोत्सव में पूज्य निर्यापक श्रवण मुनि श्री समता सागर जी, मुनि श्री पवित्र सागर जी महाराज, मुनि श्री आगम सागर जी महाराज, मुनि श्री पुनीत सागर, ऐलक श्री निश्चय सागर जी महाराज, एलक श्री निजानंद सागर जी महाराज एलक श्री धैर्य सागर जी एलक श्री स्वागत सागर जी छुल्लक श्री संयम सागर जी का सानिध्य प्राप्त हो है। साथ ही आर्यिका श्री गुरुमति माताजी ससंघ, आर्यका श्री दृढ़ मति माताजी ससंघ एवं आर्यिका श्री आदर्श मति माताजी ससंघ विराजमान रहेंगी।

इस भव्य, विशाल महत्वपूर्ण आयोजन में केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह राज्यसभा सांसद श्री नवीन जैन आगरा सहित कई महत्वपूर्ण राजनेताओं वरिष्ठ समाज सेविजनों द्वारा अपनी सहभागिता दी जावेगी।

इस आयोजन में भारी संत समागम सहित धार्मिक आयोजनों का लाभ समाज को मिलेगा। विभिन्न आकर्षक संस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी 1 से 6 तारीख तक किया जा रहा है।

आयोजन समिति द्वारा तैयारी को अंतिम रूप दिया जा रहा है द्य धार्मिक अनुष्ठान विधान में सम्मिलित होने वाले महानुभावों के लिए आवास भोजन की उचित व्यवस्था समिति द्वारा की गई है।

इस आयोजन हेतु विद्यायतन आचार्य विद्यासागर समाधि स्थली चंद्रगिरी तीर्थ डोंगरगढ़ के अध्यक्ष श्री विनोद जैन 'बडजात्या', श्री दि. जैन चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष सि. किशोर जैन एवं श्री दिगंबर जैन सर्वोपयोगी धार्मिक न्यास मुंबई से श्री प्रभात जी मुम्बई ने महा महोत्सव में द्वारा देश भर की जैन समाज का आमंत्रित किया गया है।

-प्रदीप जैन 'विश्व परिवार'

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, शनिवार 01 फरवरी 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

खाद्य एवं औषधि प्रशासन की टीम ने मेडिकल स्टोर्स में दी दबिश

नियमानुसार नारकोटिक्स दवाओं का विक्रय एवं सीसीटीवी कैमरा लगाने दिये गए निर्देश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देश पर खाद्य एवं औषधि प्रशासन की टीम नें गुरुवार को बलौदाबाजार के विभिन्न मेडिकल स्टोर्स का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विभिन्न नारकोटिक्स औषधियों का संग्रहण पाया गया। औषधि की खरीदी बिक्री के सबंध में जानकारी ली गई। सभी मेडिकल स्टोर्स संचालकों को नियमानुसार नारकोटिक्स दवाओं का विक्रय एवं सीसीटीवी कैमरा लगाने के निर्देश दिये गए। बलौदाबाजार नगरीय क्षेत्र में अपोलो फार्मेसी, बजरंग मेडिकल स्टोर्स, शंभू मेडिकल एंड जनरल स्टोर्स, चौहान मेडिकल स्टोर्स, बजरंग होम्यो पॉइंट का सघन निरीक्षण किया गया। नारकोटिक्स औषधियों की क्रय विक्रय की जानकारी संतोषजनक नहीं दिए जाने पर औषधि एवं प्रशासन अधिनियम 1940 के तहत आगामी कार्यवाही की जाएगी। शहर में स्थित समस्त मेडिकल स्टोर्स नियमानुसार नारकोटिक्स दवाईयों का क्रय विक्रय करने निर्देशित किया गया।

अधिभार से बचत होगी वर्तमान संपत्ति कर जमा करने पर निगम भिलाई में

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र में स्थित भवन/भूमि स्वामियों को उनके स्वामित्व के भवन/भूमियों पर चालू वित्तीय वर्ष 2024-25 का संपत्तिकर जमा करने पर अधिभार (ब्याज) में छूट दी गई है। निगम भिलाई क्षेत्र में जो भी संपत्तिकरदाता जिनका संपत्तिकर एवं अन्य कर जो बकाया है और जिसने वर्ष 2024-25 का कर जमा नहीं किये है। उन सभी को संपत्तिकर एवं अन्य कर जमा करने पर अधिभार से छूटी दी जा रही है। आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने भिलाई शहर के करदाताओ से अपील की है, कि जो भी भूस्वामी अपना संपत्तिकर एवं अन्य कर की राशि निगम में अभी तक जमा नहीं किये है। वे सभी करदाता 31 मार्च 2025 के पहले अपना बकाया सभी कर की राशि निगम में जमा कर दे। जिससे उनके उपर लगने वाले अधिभार से छूट दिया जा रहा है। जो करदाता 31 मार्च के बाद अपना संपत्तिकर की राशि जमा करेगे। उनको 18त्न ब्याज संपत्तिकर एवं बकाया करों पर अतिरिक्त अधिभार लगाकर संपत्तिकर की राशि जमा करना पड़ेगा। निगम का काउंटर कार्यालय समय में छुट्टी के दिनों भी खुला रहेगा। आप एजेंसी के टोल फ्री नंबर 9770778431पर कॉल करके अपने घर से भी संपत्ति कर जमा कर सकते है। एजेंसी के कर्मचारी आपके घर पहुंच कर संपत्ति कर लेकर के रसीद प्रदान करेंगे।

कांग्रेस पार्टी से सतेंद्र नवाटोली में पार्षद चुनाव लड़ रहें, जनसेवा के साथ विकास होगी प्राथमिकता

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय के नवाटोली निवासी सतेंद्र कुमार पाठक कांग्रेस पार्टी वार्ड क्रमांक 2 नवाटोली से पार्षद चुनाव लड़ रहें है। उनका जनसंपर्क तेज हो गया है। वह घर-घर जाकर लोगों के बीच चुनावी एजेंडा बताकर वार्डवसियों को अपने पक्ष में वोट देने की अपील कर रहें है। पाठक ने बताया वार्ड की बुनयादी सुविधा सड़क, नाली, पेयजल अन्य समस्याओं का समाधान पहली प्राथमिकता होगी। इसके आलावा वार्ड में स्वास्थ्य कैंप लगाकर स्वास्थ्य जांच कराई जायेगी। उन्होंने बताया कि वार्ड वासियों को नगर पालिका से संबंधित किसी भी कार्य के लिए भटकना नही पड़ेगा। बता दे की सतेंद्र पाठक जमीनी तौर पर लोगों से जुड़े है। वह जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराने में सहयोग करते है। उनकी सेवाभाव, तत्परता एवं जनहित कार्यो को देखते हुए कांग्रेस पार्टी ने जनसेवा का अवसर दिया है।

जमाअत ए इस्लामी हिन्द प्रयागराज की घटना पर गहरा दुख व्यक्त करती है

रायपुर (विश्व परिवार)। हम प्रयागराज के महाकुंभ में हुई दुर्भाग्यपूर्ण भगदड़ पर गहरा दुख व्यक्त करते हैं, जिसमें कई निर्दोष श्रद्धालुओं की जान चली गई है। इस दुख की घड़ी में मेरी हार्दिक संवेदनाएँ उन परिवारों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खोया है। हम उन लोगों के साथ एकजुटता से खड़े हैं और इस दुख की घड़ी में उनमें धैर्य और शक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना एक बार फिर इस महत्व को रेखांकित करती है कि इतने विशाल सम्मेलन के लिए सतर्क योजना और भीड़ प्रबंधन की तत्काल आवश्यकता है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। सामान्य श्रद्धालुओं के लिए निर्बाध व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए, और प्रशासन को वीआईपी के लिए विशेष सेवाओं और पहुंच के बजाय उनकी सुरक्षा को प्राथमिकता देने की मूलभूत जिम्मेदारी को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार को जिम्मेदारी लेनी चाहिए और अपनी व्यवस्था में कमियों को तुरंत दूर करना चाहिए। सामान्य तीर्थयात्रियों के जीवन को वीआईपी और विशेष अतिथियों के समान देखभाल और सुरक्षा का हक है। मैं अधिकारियों से आग्रह करता हूं कि भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए सुधारात्मक कदम उठाएं।

एनआईटी रायपुर और जूम-माई-लाइफ, कैलिफोर्निया, यूएसए के बीच एआई-संचालित स्वास्थ्य सेवा इनोवेशन के लिए किया गया एमओयू

रायपुर (विश्व परिवार)। बायोमेडिकल और चिकित्सा क्षेत्र की प्रगति के लिए आर्टिफीसियल इंटेलीजेंस एप्लीकेशन के शोध और विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर ने 30 जनवरी, 2025 को जूम-माई-लाइफ, कैलिफोर्निया, यूएसए के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते पर एनआईटी रायपुर के निदेशक प्रो. एन.वी. रमना राव, और जूम-माई-लाइफ के संस्थापक और सीईओ श्रीनिवास श्रीपदा ने दोनों संस्थानों के प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में औपचारिक हस्ताक्षर किये। इस दौरान डीन अकादमिक डॉ श्रीश वर्मा, हेड कैरियर डेवलपमेंट सेंटर डॉ समीर बाजपेयी, डीन फैकल्टी वेलफेयर डॉ डी सान्याल, डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी डॉ जी पी एस सी मिश्रा, विभागाध्यक्ष, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग डॉ अरिंदम बिट और फैकल्टी मेम्बर्स मौजूद रहे।

यह एमओयू स्वास्थ्य सेवा परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एआई-संचालित समाधान और उपचार रणनीतियों में संयुक्त शोध के लिए एक सहयोगी ढांचे की रूपरेखा तैयार करता है। दोनों संगठन अनुसंधान पहलों की पहचान करने और उन्हें आगे बढ़ाने, अभिनव और लागत प्रभावी उपचार समाधान विकसित करने के लिए मिलकर काम करेंगे। इसके अतिरिक्त, यह समझौता संयुक्त प्रयासों से उत्पन्न इनोवेशन के साझाकरण को सुनिश्चित करने के लिए इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

इस रणनीतिक गठबंधन से नवाचार को बढ़ावा मिलने, अकादमिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलने और सहयोगात्मक अनुसंधान और व्यावहारिक अनुप्रयोगों के माध्यम से बायोमेडिकल क्षेत्र में महत्वपूर्ण चुनौतियों के समाधान होने की उम्मीद है। एनआईटी रायपुर और जूम-माई-लाइफ दोनों ने इस साझेदारी के संभावित प्रभाव पर विश्वास जताया, जो समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के तुरंत बाद प्रभावी हो जाएगा। एनआईटी रायपुर के बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बिकेश कुमार सिंह को जूम-माई-लाइफ के साथ सभी सहयोगी गतिविधियों के लिए समन्वयक के रूप में नामित किया गया है।

बाल आनंद मेला में पहुचे सीआरपीएफ के जवान

13000 हजार की खाद्य सामग्रियों का हुआ विक्रय

आरंग (विश्व परिवार)। शुक्रवार को नवीन प्राथमिक, प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा के संयुक्त तत्वावधान में बाल आनंद मेला का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए अपनी-अपनी खाद्य सामग्रियों का स्टाल लगाए। शिक्षको ने बताया बाल आनंद मेला में बच्चों में गजब का उत्साह दिखा। बच्चे विभिन्न पकवानों का करीब 50 से भी अधिक स्टाल लगाए थे। जिसमें सभी बच्चों का मिलाकर करीब तेरह हजार रुपए की खाद्य सामग्रियों का विक्रय किये।

वही बालआनंद मेला में सीआरपीएफ कैंप भिलाई के चिकित्सा शाखा से डाक्टर राजेश गर्ग एवं डाक्टर इन्दु वशिष्ठ ने बाल मेला में शामिल होकर अपने बचपन को याद करते नजर आए।इस अवसर पर उन्होंने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा इस प्रकार के आयोजनों से बच्चे मार्केटिंग का हुनर सीखते हैं। उन्होंने तीन जनवरी को सीआरपीएफ कैंप अस्पताल शाखा भिलाई द्वारा चरौदा में आयोजित होने वाले स्वास्थ्य शिविर में अधिक से अधिक लोगों को शामिल होने बच्चों व पालकों को प्रेरित किया। इस अवसर पर तीनों शालाओं के संस्था प्रमुखों सहित बड़ी संख्या में बच्चो, शिक्षक शिक्षिकाओं व पालकों की उपस्थिति रही।

ईव्हीएम से चुनाव प्रक्रिया की पूरी व्यवहारिक प्रशिक्षण लें : कलेक्टर

सेक्टर ऑफिसर को मिला हैंडस ऑन प्रशिक्षण

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2025 अंतर्गत ईव्हीएम एवं निर्वाचन प्रक्रिया के सम्बन्ध में शुक्रवार को संयुक्त जिला कार्यालय के सभाकक्ष में सेक्टर अधिकारियों को हैंडस ऑन प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी दीपक सोनी नें सभी सेक्टर अधिकारियों को ईव्हीएम की असेंबलिंग से लेकर मतदान एवं मतगणना की प्रक्रिया का व्यवहारिक प्रशिक्षण लेने कहा ताकि मतदान अधिकारियों की बेहतर मॉनिटरिंग एवं निर्वाचन सफलता पूर्वक संपन्न हो सके। कलेक्टर ने कहा कि सेक्टर अधिकारी का निर्वाचन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सभी सेक्टर अधिकारी अपने समकक्ष पुलिस सेक्टर अधिकारी से सम्पर्क करे और अपने सेक्टर के मतदान केंद्रों का संयुक्त दौरा करें। कम्युनिकेशन प्लान के अनुसार लोगों से सतत संपर्क करें। इसी तरह रूट चार्ट के अनुसार मतदान केंद्रों तक सुगमता से पहुंच का भी आंकलन करें। जिले के सभी नगरीय निकाय के लिए 40 रूट निर्धारित किये गये है। जिसके लिए एक-एक रूट प्रभारी होगा। सेक्टर अधिकारियों के नाम और मोबाइल नंबर सभी मतदान केंद्र में वाल राईटिंग कराने के निर्देश दिए गए। मास्टर ट्रैनर्स के द्वारा सेक्टर अधिकारियों को ई व्ही एम मशीन तथा निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित विस्तृत जानकारी दी गई। बताया गया कि ईव्हीएम मशीन में क्लॉक एरर आने पर पीठासीन अधिकारी को एक पंचनामा देना होगा। मतदान के समय मतदान केंद्रों में मोबाइल ले जाना पूर्णत: प्रतिबंधित रहेगा। इस अवसर पर अपर कलेक्टर मिथलेश डोंडे, उप जिला निर्वाचन अधिकारी अतुल शेट्टे, डिप्टी कलेक्टर रंजना आहूजा सहित मास्टर ट्रेनर्स एवं सेक्टर अधिकारी उपस्थित थे।

फुटपाथ पर व्यवसाय करने वालों को वेडिंग जोन बनाकर व्यवस्थापित किया जाएगा

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई क्षेत्र के बहुत सारे बाजार के जगहो पर रेहड़ी, चाट, खोमचा, फल, जूस, पान ठेला, मोची, धोबी, चना मूररा, आईसक्रिम पार्लर, चुस्की, चैमीन इत्यादि बेचने वाले अवैध रूप से दुकान लगाकर बेचते रहते है। निगम द्वारा बार-बार उन्हे हटाया जाता है। ऐसे फूटकर विक्रेताओ को व्यवस्थापित करने के लिए निगम के जोन-1 नेहरू नगर में 35 व्यवस्थित रूप से दुकानो का निर्माण किया जा रहा है। जिसमें होगा पक्का निर्माण टायलेट ब्लाक, सोलार लाईट, पार्किंग, सौदर्यीकरण इत्यादि जिसकी लागत लगभग 1 करोड़ प्रस्तावित है। इससे व्यपारियो को एक स्थायीत्व मिल सके, निगम एवं विक्रेताओ के बिच एक अनुबंध होगा, उनको कागजात मिलेगा। जो स्थायित्व होगा, वे अवैध कब्जाधारी नहीं कहलायेगे। एक निर्धारित स्थल होगा, जहां पर आवश्यकतानुसार नागरिक आकर खरीद सकते है। शासन की महत्वकांक्षी योजना है, सभी को रोजगार मिले।

आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय, जोन आयुक्त अजय सिंह राजपूत को लेकर प्रस्तावित स्थल नेशनल हाईवे के समीप निरीक्षण करने गये। आयुक्त का कहना था, कि दुकाने ऐसी बने जो सबके लिए उपयोगी हो। डिजाईन, पार्किंग, बैठने की व्यवस्था, लाईट, पीने का पानी, शौचालय, सौंदर्यीकरण आदि का उचित प्रबंध हो। यह भी ध्यान दिया जाये कि पेड़ इत्यादि न काटना पड़े। जो बेचने वाले एवं खरीदने वालो दोनो के लिए उपयोगी हो। निरीक्षण के दौरान अभियंता बसंत साहू, उद्यान अधिकारी तिलेश्वर कुमार साहू, जनसम्पर्क अधिकारी अजय कुमार शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

भावुक पलसेवा निवृत्त होने पर सेवानिवृत्त एवं निगम अधिकारी व कर्मचारियों ने अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को किया साझा

कमिश्नर ने सेवानिवृत्त कर्मचारियों के उज्जवल व सुखद भविष्य की कामना की

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम के मोतीलाल वोरा सभागार में सहायक अभियंता जितेंद्र समैया, सहायक राजस्व निरीक्षक श्रीमती तारा पाटिल एवं सहायक राजस्व निरीक्षक कमल स्वर्णकार के रिटायरमेंट पर कमिश्नर सुमित अग्रवाल ने शाल श्रीफल, पुष्पमाला से सम्मानित कर प्रशस्ति पत्र प्रदान कर विदाई दी।निगम के मोतीलाल वोरा सभागार में विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

कमिश्नर सुमित अग्रवाल, कार्यपालन अभियंता मोहनपुरी गोस्वामी, दिनेश नेताम, आरके जैन, वीपी मिश्र, धर्मेंद्र मिश्रा, आर.के. बोरकर, रमाकांत शर्मा, विनोद मांझी, संजय मिश्रा एवं अनिल सिंह, शुभम गोइर ने प्रशस्ति पत्र और उपहार भेंट करते हुए उनके द्वारा किए गये कार्यो की सराहना की। वहीं नगर निगम के अधिकारियों ने तीनो सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पुष्प भेंट की।सेवा निवृत्त होने पर निगम कर्मचारियों ने अपने अनुभवों को साझा किए।विदाई समारोह के दौरान रिटायरमेंट कर्मचारियो को अवकाश नगदीकरण राशि दिया गया। बता दे कि नगर निगम के स्वायत्तशासी कर्मचारी महासंघ के प्रयासों से पूर्व में भी हुए रिटायरमेंट कर्मचारियो को भी अवकाश नगदीकरण राशि दिया गया। कमिश्नर सुमित अग्रवाल ने कहा कि अपने जीवन का आधा समय आपने निगम प्रशासन को दिया है, आने वाला समय आपका और भी बेहतर हो, निगम परिवार ऐसी कामना करता है, सेवानिवृत्त के बाद कभी भी कोई परेशानी होने पर निगम परिवार सदैव साथ होने का भरोसा उन्हें दिलाया गया।

35वीं राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के समापन पर हुए विभिन्न प्रतियोगिता

कलेक्टर व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने किया प्रतिभागियों को किया पुरुस्कृत

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। 35 वीं राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह का समापन शुक्रवार को जिला मुख्यालय के एस डी पी ओ कार्यालय प्रांगण में किया गया। इस कार्यक्रम में कलेक्टर रोहित व्यास समेत अन्य शामिल हुए।

ज्ञात हो कि जशपुर पुलिस द्वारा 35 वीं राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के दौरान जिले के विभिन्न स्कूल कालेजों में सड़क सुरक्षा के संबंध में विभिन कार्यक्रमों जैसे निबंध, चित्रकला, स्लोगन, प्रश्नोतरी, रंगोली प्रतियोगिता आयोजन किया था। जिसमें उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रतिभागियों को कलेक्टर रोहित व्यास व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शशि मोहन सिंह द्वारा पुरुस्कृत कर प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया गया। समापन समारोह के दौरान कलेक्टर जशपुर रोहित व्यास, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जशपुर शशिमोहन सिंह, डीएसपी यातायात मंजुलता बाज, आरटीओ जशपुर विजय निकुंज, विकासखंड शिक्षा अधिकारी कल्पना टोप्पो, सउनि सुनेश्वर पैकरा सहित यातायात पुलिस जशपुर के अधिकारी कर्मचारी एवं विद्यालयीन छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ई-निविदा सूचना

निविदा सूचना सं.: ई-आर-टी-118-24-25
दिनांक: 27.01.2025
कार्य का नाम: एक वर्ष की अवधि हेतु वरिष्ठ डीईएन (I), रायपुर के अधिकार क्षेत्र में ट्रैक का दैनिक निरीक्षण और ट्रैक की पेट्रोलिंग।
निविदा मूल्य: ₹ 60,39,721/- | **ईएमडी:** ₹ 1,20,800/-।
निविदा प्रस्तुत करना: दिनांक **27.02.2025** के **11:00** बजे तक| **निविदा खोलना:** दिनांक **27.02.2025** के **11:00** बजे।
विवरण/निविदा दस्तावेज की खरीद, पात्रता मानदंड हेतु वरिष्ठ मंडल इंजिनियर (सम-वय), द.पू.म.रेलवे, रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें या वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर निविदा दस्तावेज का अवलोकन/डाउनलोड करें।
वरिष्ठ मंडल अभियंता - I,
PR/R/ENGG/FL/225 **द.पू.म. रेलवे, रायपुर**
South East Central Railway @secrail

कार्यालय नगर पालिक निगम भिलाई-चरौदा, जिला- दुर्ग (छ.ग.)

क्रमांक / सम्पदा/2025/1359 **भिलाई-चरौदा, दिनांक. 31/01 2025**

// नामांतरण सूचना //

इस ईश्तहार द्वारा हित रखने वाले समस्त हितग्राहीयों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है, कि निम्नलिखित हस्तांतरितों के नाम से निकाय के भूखंड / भवनों को हस्तांतरिती के नाम पर हस्तांतरण करने में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथि से 15 दिवस के भीतर लिखित आपत्ति अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है, बाद में प्रस्तुत आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।

क्र.	हस्तांतरणकर्ता का नाम	हस्तांतरिती का नाम	संपत्ति स्वरूप	संपत्ति का विवरण
1	स्व. धीरज प्रसाद साहू आ.-भगवान दीन निवासी-भिलाई-03	श्रीमती प्रेमा देवी, पति- स्व. धीरज प्रसाद साहू व अन्य 01, निवासी-भिलाई-03	वारिसान	चन्दूलाल चन्द्राकर व्याव. परि. भिलाई-03, ब्ला. 05, भू.क्र. 11, आ. 3.75×4.0 मीटर
2	स्व. धीरज प्रसाद साहू आ-भगवान दीन निवासी-भिलाई-03	श्रीमती प्रेमा देवी, पति- स्व. धीरज प्रसाद साहू व अन्य 01. निवासी-भिलाई-03	वारिसान	कब्जा व्यवस्थापन, इंदिरापारा भिलाई-03, भूखंड का आकार 79.89 वर्गमीटर
3	श्री रविशंकर वर्मा आ. - श्री नीलम सिंह निवासी ननकट्टी, दुर्ग	श्रीमती रितु वर्मा पति- श्री रविशंकर वर्मा निवासी ननकट्टी, दुर्ग	दानपत्र	वि.बै.आ.यो. भिलाई-03 से. 04, ब्लॉक क्र . 13. भू.क्र. 12, आकार 4 × 9 = 36 व.मी.
4	श्री रविशंकर वर्मा आ.-श्री नीलम सिंह निवासी- ननकट्टी, दुर्ग	श्रीमती नागेश्वरी वर्मा पति- श्री तेजेश्वर वर्मा निवासी ननकट्टी, दुर्ग	दानपत्र	वि.बै.आ.यो. भिलाई-03 से. 04, ब्लॉक क्र. 13. भू.क्र . 13, आकार 4 × 9 = 36 व.मी.
5	श्री पी. चिरंजीवी 5 आ.-स्व. पी. लच्चना निवासी- भिलाई-03	श्रीमती प्रीती बरोई आ.-सनातन बरोई निवासी- भिलाई-03	बिक्री नामा	वसुन्धरा नगर द.आ.यो भिल-03, ब्लॉक क्र. 15, भू. क्र. 03 आकार 15 X 30 = 450 फूट
6	श्री सुभाष त्रिपाठी 6 आ. - अशोक त्रिपाठी निवासी- भिलाई-03	श्री अरविन्द कुमार आ.-राजाराम कोसरिया निवासी- चरौदा	बिक्री नामा	निहारिका व्यावसायिक परि. भि.3 ब्लॉ.क्र. 3ए, दुकान क्र. 22, आकार 3X4.5 = 13.5 व.मी.

गांधी जी का यहीं संदेश,
स्वच्छ बने अपना भारत देश।

नगर पालिक निगम
भिलाई-चरौदा

कार्यालय सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन,
व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा जनता कॉलोनी तिलक नगर, गुढ़ियारी, रायपुर में निर्मित जनता भवन योजना में से भवन / **भूखण्ड क्र. जनता-397, श्री श्रीनिवास मुगुला राव पिता श्री कमलेश्वर मुगुला राव द्वारा आम मुख्त्यार मुगुला राम्या स्वाती आत्मजा मुगुला श्रीनिवास राव** को को भाड़ाक्रय / पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित / नामांतरित किया गया है। आबंटी / नामांतरी द्वारा **दिनांक 24.03.1994** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 27.01.2025** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री रंजित सहारे पिता श्री भैयालाल सहारे** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./17549/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 24-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17549
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445M0164A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RENUKA DAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAVINDRA NATH DAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **HEMRAJ** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O LT. MOLHU MAJHI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./17545/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 27-01-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 17545
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446D00428** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PRAKASH KADU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE. MADHUKAR RAO KADU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHRI TRILOKI TIWARI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI PITAMBER TIWARI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 01 फरवरी 2025

बेहतर समाज निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका - कलेक्टर अवनीश शरण

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान मे महोत्सव के द्वितीय सोपान का भव्य आयोजन

बिलासपुर (विश्व परिवार)। आज उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान में वार्षिकोत्सव सत्र 2024-25 का भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कलेक्टर अवनीश शरण एवं विशिष्ट अतिथि संयुक्त संचालक शिक्षा संभाग रामायण आदित्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत मशाल प्रज्वलन, धावक परिक्रमा एवं मशाल स्थापना के साथ हुई, जिसे बीएड प्रशिक्षार्थी रुक्मणी पैकरा एवं चंद्रशेखर सिंह ने संपन्न किया। इसके पश्चात महाविद्यालय की प्राचार्य मीता मुखर्जी सहित प्रशिक्षार्थियों एवं आचार्यों द्वारा मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं प्रतीक पुष्प से अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रशिक्षार्थियों ने मास्टर आफ सेरेमनी करीम खान के नेतृत्व में भव्य मार्च पास्ट प्रस्तुत किया, जिसके उपरांत स्वागत गीत और विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समां बांधा। आकर्षण का केंद्र बस्तरिहा नृत्य दादर के कहवा तथा बिहु नृत्य रहा, जिसमें प्रशिक्षार्थियों ने अपनी अद्भुत प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। महाविद्यालय की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का प्रतिवेदन प्राचार्य प्रो. मीता मुखर्जी द्वारा प्रस्तुत किया गया, जबकि प्रशिक्षार्थी प्रतिनिधि ऋषभ निषाद एवं छात्रावास प्रतिनिधि युवनाश यादव ने समस्या एवं आवश्यकता से संबंधित मांगपत्र का वाचन किया एवं मांग पत्र सौपा। विशिष्ट अति श्री रामायण आदित्य ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों की महत्ता पर बल देते हुए प्रेरणादायी विचार साझा किया। तथा इस अवसर पर कलेक्टर श्री शरण ने प्रशिक्षार्थियों के मांगपत्र पर शीघ्र कार्यवाही करने का आश्वासन दिया एवं प्रशिक्षार्थियों द्वारा किये गये शानदार मार्च-पास्ट एवं बैंड वादन की खूब तारीफ की। कलेक्टर ने प्रशिक्षार्थियों को अपने उद्बोधन से प्रेरित करते हुए अनुशासनबद्ध तरीके से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि बेहतर समाज निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका होती है क्योंकि वे आने वाली पीढ़ियों को तैयार करते हैं। उद्बोधन के पश्चात् कलेक्टर महोदय ने उद्घाटन की विधिवत घोषणा की एवं ध्वजोतोलन के पश्चात रंग-बिरंगे गुब्बारे उड़ाकर समारोह का शुभारंभ किया। अतिथियों के समक्ष खेलकूद प्रतियोगिताओं में 100 मीटर दौड़ (महिला एवं पुरुष) के फाइनल मुकाबले हुए, जिसमें महिला वर्ग में सबसे तेज दौड़ते हुए मधुरम की भारती ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं सत्यम की ज्ञानदेवी द्वितीय तथा सुंदरम की नैनसी टोप्पो तृतीय स्थान पर रहीं। वहीं पुरुष वर्ग में प्रथम दिग्विजय सिंह, द्वितीय डमरूधर एवं तृतीय हितेश विश्वकर्मा रहें।विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा विक्ट्री स्टेंड पर क्राऊन एवं बुके से सम्मानित किया गया। प्रथम सत्र के कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य द्वारा मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों को प्रतीक चिन्ह प्रदान किए गए, जिसके बाद सहायक प्राध्यापक डॉ. बी. व्ही. रमणा राव द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. संजय मनोहर आयदे ने किया संपूर्ण आयोजन उत्साह, ऊर्जा एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता का प्रतीक रहा, जिसमें महाविद्यालय के आचार्य वृंद, कार्यालयीन स्टाफ एवं प्रशिक्षार्थियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। आज के द्वितीय सोपान में गोला एवं तवा फेंक की प्रतियोगिता संपन्न हुई।

संक्षिप्त समाचार

मादक पदार्थ गांजा किया गया नष्ट

मुंगेली (विश्व परिवार)। दिनांक 30.01.2025 को अवैध मादक पदार्थ जप्तशुदा गांजा का नष्टीकरण किया गया है। मुंगेली में पुलिस कप्तान भोजराम पटेल द्वारा कार्यभार सम्हालने के पश्चात लगातार अवैध मादक पदार्थ बिक्री एवं परिवहन करने वालों के विरूद्ध लगातार कार्यवाही की जा रही है, इसी अनुक्रम में जिले में कुछ माह से की गयी 11 कार्यवाहियों में दर्ज 11 प्रकरणों में 101.394 किलोग्राम गांजा, जिसमें 01 नग गांजा का पौधा जिसका वनज 2.778 किलोग्राम भी शामिल है जप्त किये गये थे, साथ ही नशीला इंजेक्शन 61 नग, एम्पुल 39 नग एवं निडिल (सूई) 30 नग जप्त कर भंडारण गृह में रखा गया था। उक्त जप्तशुदा अवैध मादक पदार्थों को जिला मुंगेली कलेक्टर राहुल देव (भा.प्र.से.) एवं पुलिस अधीक्षक मुंगेली भोजराम पटेल (भा.पु.से.) की उपस्थिति में जिला स्तरीय औषधी निपटान समिति के सदस्य अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुंगेली सुनवनीत कौर छाबड़ा, राजेश जायसवाल जिला आबकारी अधिकारी मुंगेली तथा क्षेत्रिय अधिकारी छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मण्डल बिलासपुर तथा पंचान की उपस्थिति में राजमिलिंग इंडस्ट्रीज, नांदघाट रोड, ग्राम कामता पोस्ट मुंगेली जिला मुंगेली के भटठी में विधिवत जलाकर एवं रोलर के माध्यम से नष्ट कर नष्टीकरण की कार्यवाही संपन्न की गयी।

पटवारी रिश्वत लेते गिरफ्तार

मुंगेली (विश्व परिवार)। मुंगेली जिले के रामगढ़ में पदस्थ पटवारी और उसके सहयोगी को 1 लाख की रिश्वत लेते एसीबी की टीम ने गिरफ्तार किया है। पटवारी और आरआई ने जमीन सीमांकन के नाम पर 5 लाख की रिश्वत मांगी थी। मामले में आरआई की संलिप्तता की जांच हो रही है। मिली जानकारी के अनुसार मामला कोतवाली थाना रामगढ़ पटवारी हल्का का है जहां पटवारी सुशील जायसवाल के खिलाफ पीड़ित विभाष सोनी ने रिश्वत मांगने की शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में पीड़ित ने बताया कि उसके पिता शेखर सोनी के नाम की कृषि भूमि ग्राम रामगढ़ में स्थित है। जिसमें लगभग 12 खसरे की कुल 26 एकड़ जमीन के सीमांकन कराना था। जिससे लिए मुंगेली आरआई नरेश साहू, रामगढ़ पटवारी अमलीडीह सुशील जायसवाल ने 5 लाख की रिश्वत मांगी थी। प्रार्थी द्वारा एसीबी बिलासपुर में 11 नवंबर को रिश्वत मांग की शिकायत करने पर सत्यापन कराया गया था। जिस पर शिकायत सही पाई गई है। सत्यापन के दौरान पटवारी सुशील जायसवाल ने 4 लाख रुपए पर सहमति दी गई थी। गुरूवार को प्रार्थी ने पटवारी सुशील जायसवाल को रुपए देने के लिए गया था। तभी पटवारी ने अपने सहायक गुलाब दास मानिकपुरी को रिश्वत रकम ने लेने के लिए कहा। ठीक इसी दौरान एसीबी टीम ने गुलाब दास और आरोपी पटवारी सुनील जायसवाल को रंगे हाथ पकड़ लिया गया है। गुलाब दास मानिकपुरी से रिश्वत की रकम एक लाख को बरामद कर लिया गया है। आरोपी पटवारी सुशील जायसवाल और सहायक गुलाब दास मानिकपुरी के खिलाफ धारा 712 पीसी एक्ट 1988 के तहत कार्यवाही की जा रही है। वहीं एक संदेही आरआई नरेश साहू की भूमिका की जांच की जा रही है।

कलेक्टर ने मतदान दलों के प्रशिक्षण का लिया जायजा

बिलासपुर (विश्व परिवार)। नगरीय निकाय चुनाव के लिए चल रहे मतदान कर्मियों के प्रशिक्षण का कलेक्टर अवनीश शरण ने जायजा लिया। प्रथम चरण के पहले दिन का प्रशिक्षण आज एक साथ लाल बहादुर शास्त्री स्कूल और शासकीय मल्टीपर्पज स्कूल में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में लगभग 2 हजार मतदान अधिकारी एवं कर्मी शामिल हुए। कलेक्टर ने दोनों स्कूल का दौरा कर प्रशिक्षण कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने कर्मियों को बारीकी से मास्टर ट्रेनरों द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण पर ध्यान देने के निर्देश दिए। ईव्हीएम मशीनों के हैण्ड्स ऑन प्रशिक्षण पर ज्यादा जोर दिया। उन्होंने स्थानीय चुनाव और अन्य चुनावों में अंतर को समझाते हुए ध्यान रखने योग्य प्रमुख बिन्दुओं को रेखांकित किया। प्रशिक्षण में ईव्हीएम के साथ एमपी एवं गोदरेज टाईप मतपेटियों के बारे में भी बताया गया। कलेक्टर ने कहा कि इस बार अच्छे मौसम में चुनाव हो रहे हैं। मतदान के दौरान न तो अधिक गरमी रहेगी और न ही ज्यादा ठण्ड। नगरीय निकाय एवं पंचायत चुनाव मिलाकर लगातार चार चक्र में चुनाव होंगे। प्रयास यह किया जा रहा है कि एक मतदान दल को दोबारा ड्यूटी ना लगे। यदि जरूरत पड़ भी गई तो उन्हें विश्राम का अंतराल देकर लगाया जायेगा। मतदान अधिकारियों के ठहरने और खाने पीने का इस बार बेहतर इंतजाम किया जा रहा है। कलेक्टर ने विशेषकर पंचायत चुनाव को लेकर कहा कि मतदान के उपरांत स्थल पर ही मतगणना किया जाना है। ग्रामीण क्षेत्र में एक मतदाता को 4 वोट डालने होंगे। पंच, सरपंच, जनपद सदस्य एवं जिला पंचायत सदस्य के। सभी का मतपत्र अलग-अलग रंगों का होगा। बड़ी सावधानी से एवं राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुरूप पारदर्शिता पूर्वक काम करें। किसी को न लगे कि उसके साथ अन्याय किया जा रहा है।

नगरीय निकाय आम निर्वाचन नगरीय निकाय हेतु अभ्यर्थियों की अंतिम सूची जारी

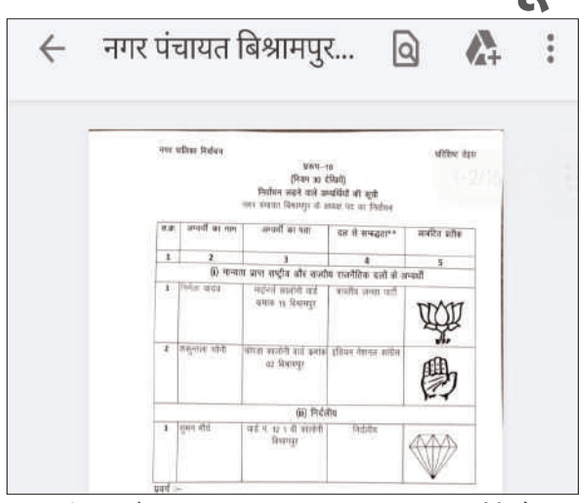

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2025 के लिए नाम वापस लेने के अंतिम तिथि बीत जाने के पश्चात् आज निकायों नगर पालिका परिषद सूरजपुर एवं नगर पंचायत (बिश्रामपुर, जरही, भटगांव, प्रतापपुर) के संबंधित रिटर्निंग ऑफिसर द्वारा निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों की अंतिम सूची जारी कर दी गई है।

निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों की जारी गई सूची के अनुसार नगर पालिका परिषद सूरजपुर से अध्यक्ष पद के लिए 02 एवं 11 अभ्यर्थियों के नाम वापसी के बाद पार्षद पद के लिए 56 उम्मीदवार हैं। नगर पंचायत बिश्रामपुर से अध्यक्ष पद के लिए 03 एवम 02 अभ्यर्थियों के नाम वापसी के बाद पार्षद पद के लिए 47, नगर पंचायत जरही से अध्यक्ष पद के लिए 05 और 03 अभ्यर्थियों के नाम वापसी के बाद पार्षद पद के लिए 47,नगर पंचायत भटगांव से अध्यक्ष पद के लिए 08 और 07 अभ्यर्थियों के नाम वापसी के बाद पार्षद पद के लिए 42 और नगर पंचायत प्रतापपुर से अध्यक्ष पद के लिए 02 और 04 अभ्यर्थियों के नाम वापसी के बाद पार्षद पद के लिए 29 उम्मीदवार हैं। निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों को निर्वाचन प्रतीकों का आबंटन भी संबंधित रिटर्निंग आफिसर द्वारा कर दिया गया है।

कलेक्टर ने नगरीय निकाय चुनाव की तैयारियों की समीक्षा की

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी दीपक सोनी ने आज आगामी नगरीय निकाय चुनाव की तैयारियों की समीक्षा की। सोनी ने कहा कि सभी अधिकारी इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी परिस्थिति में आदर्श आचरण संहिता का उल्लंघन न हो। उन्होंने कहा उम्मीदवारों के निर्वाचन व्यय सीमा पर सूक्ष्म निगरानी रखें। नवीन मतदाताओं के एपिक कार्ड का सही समय पर वितरण सुनिश्चित करने, सभी निकायों में कंट्रोल रूम की स्थापना करने के निर्देश दिए। सोनी ने नगरीय निकायों के सभी वार्डों में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का डेमो प्रदर्शन करने के निर्देश भी दिए हैं ताकि मतदाताओं को मतदान के समय कोई परेशानी का सामना न पड़े। उन्होंने मतदाता जागरुकता अभियान जागव बोटर कार्यक्रम, मतदान दलों के गठन और प्रशिक्षण, मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मॉनिटरिंग टीम, निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण, मतपत्र मुद्रण एवं वितरण, यातायात व्यवस्था, दिव्यागजन सहायता केंद्र, शिकायत एवं कंट्रोल रूम सहायता केंद्र की स्थापना, मतदान कर्मी कल्याण संबंधी गतिविधियां, चिकित्सा व्यवस्था, निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षणों, मतदान सामग्री वितरण, संग्रहण एवं मतगणना स्थल आदि में बैरिकेडिंग आदि की व्यवस्था और मत पेटी वितरण एवं अन्य निर्वाचन सामग्री वितरण और संग्रहण कार्य की समीक्षा की।

भाजपाईयों ने डरा-धमका कर कांग्रेस प्रत्याशी को नाम वापस लेने किया मजबूर

कोरबा (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के कोरबा नगर निगम के वार्ड नंबर 18 कोहड़िया वार्ड में बीते दिन कांग्रेस प्रत्याशी हरीश कुमार के नाम वापिस ले लेने से श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन के भाई, भाजपा प्रत्याशी नरेंद्र देवांगन निर्विरोध पार्षद चुनाव जीत गए. इसे लेकर आज कांग्रेस ने प्रेस कांफ्रेंस कर भाजपा पर गंभीर आरोप लगाए हैं.कांग्रेस के जिला शहर अध्यक्ष सपना चौहान ने आज प्रेस में कहा कि भाजपा ने सत्ता बल और धन बल का प्रयोग कर मंत्री लखनलाल देवांगन के भाई को जीत दिलाने के लिए कांग्रेस प्रत्याशी पर दबाव बनाकर उसे नाम वापस लेने पर मजबूर किया है. उन्होंने कहा कि वार्ड नंबर 18 से कांग्रेस प्रत्याशी हरीश कुमार पार्टी का सक्रिय कार्यकर्ता है. उस पर इतना दबाव बनाया गया कि वो डरा सहमा हुआ है. उससे संपर्क किए जाने पर उसका मोबाइल बंद है और घर पर भी नहीं है घर वाले भी डरे हुए हैं. नरेंद्र देवांगन के खिलाफ खड़े कांग्रेस के प्रत्याशी हरीश कुमार उर्फ विक्की ने अपना नाम वापस ले लिया है. इसके साथ ही उन्होंने कई अन्य कांग्रेसी पार्षदों पर दबाव बनाए जाने का आरोप भी भाजपा पर लगाया है।

कलेक्टर ने बरटोली स्थित सदभाव मंडप भवन का किया निरीक्षण

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। कलेक्टर रोहित व्यास ने आज जशपुर के बरटोली स्थित सदभाव मंडप भवन का निरीक्षण की और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने जशपुर में बच्चों के लिए लोक कला केन्द्र खोलने के लिए संभावित जगह का चिन्हांकन करने के लिए कहा है। ताकि इच्छुक बच्चों को विभिन्न संगीत, कला और नृत्य का अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा सके। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि लोक कला केन्द्र के लिए उपयुक्त जगह की चयन किया जाए। जहॉ बच्चों को लोक कला, विभिन्न वाद यंत्रों, संगीत नृत्य में प्रशिक्षण दिया जा सके। जिससे बच्चों को विभिन्न कला के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का अवसर मिल सके। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर प्रशांत कुशवाहा, नगर पालिका अधिकारी योगेश्वर उपाध्याय और डां आनंद पांडे अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। कलेक्टर ने कहा कि लोक कला और संगीत भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अहम हिस्सा हैं। ये विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों की पारंपरिक कला और संगीत शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोक कला में चित्रकला, विभिन्न लोक संगीत में गायन, वादन और नृत्य की शैलियाँ होती हैं जो एक समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करती हैं। उदाहरण के लिए, भारत में विभिन्न क्षेत्रों के लोक संगीत शैलियाँ जैसे लोक संगीत, लोक नृत्य संगीत बहुत प्रसिद्ध हैं। लोक कला और संगीत दोनों ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सदियों से हस्तांतरण होते रहे हैं, और ये हमारे सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। थिएटर, पेंटिंग, लोक कला नृत्य के साथ आधुनिक युग के नृत्य का बच्चों को प्रशिक्षण दिया जा सके।

भटगांव नगर पंचायत में नाम वापसी के अंतिम दिन दो उम्मीदवारों ने अपना नाम लिया वापस, 06 उम्मीदवार मैदान में डटे

गोपाल सिंहविद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-भटगांव। नगर पंचायत भटगांव के चुनाव मे नाम वापसी के अंतिम दिन तक अध्यक्ष पद के 2 उम्मीदवारों ने अपना नाम वापस ले लिया और अब 6 उम्मीदवार मैदान में अपनी किस्मत आजमाने के लिए ताल ठोक रहे जिन्हें रिटर्निंग ऑफिसर ने चुनाव चिन्ह आवंटित कर दिया है। अब अध्यक्ष पद के लिए भाजपा और कांग्रेस के साथ 4 निर्दलीय उम्मीदवार के साथ 6 लोग मैदान में बच गए है जिनके बीच मुकाबला होना है। वहीं नाम वापसी के आखिरी दिन तक 7 पार्षद पद के प्रत्याशियों ने अपना नाम वापस ले लिया इसके बाद 15 वार्ड के लिए कुल 42 पार्षद उम्मीदवार अब मैदान में बच गए हैं जबकि 49 लोगों ने नामांकन किया था। अध्यक्ष और पार्षद पद के सभी उम्मीदवारों के किस्मतों का फैसला जनता 11 फरवरी को करेगी और निर्णय 15 फरवरी को देगी । नाम वापसी के बाद देखना और दिलचस होगा कि कितने उम्मीदवार मैदान में वोटिंग के दिन तक टिकते हैं तथा कितने उम्मीदवार वोटिंग से पहले मैदान छोड़कर भाग जाते हैं। इस बार नगर पंचायत भटगांव में भाजपा तथा कांग्रेस दोनों दल के अध्यक्ष पद के लिए निर्दलीय प्रत्याशी सिर दर्द बन कर उभर रहें हैं और इस बार अध्यक्ष पद में त्रिकोणी संघर्ष होने की संभावना है। अध्यक्ष पद के लिए कांग्रेस से जहाँ एक बागी मैदान में है तो वहीं भाजपा से बगावत करके 3 बागी अब मैदान में उतरकर ताल ठोक रहे हैं।

नाम वापसी के अंतिम दिन के बाद नगर पंचायत भटगांव के रिटर्निंग आफिसर ने अध्यक्ष पद के उम्मीदवार के रूप मे भाजपा की परमेश्वरी रजवाड़ों को फुल्ल छाप कांग्रेस के सूरज कुमार गुप्ता को पंजा छाप निर्दलीय अयोध्या प्रसाद राजवाड़े को कांच का गिलास छाप वीरेंद्र शर्मा को स्लेट छाप चंदन कुमार को टेबल छाप तथा उदय लाल यादव को स्टूल छाप चुनाव चिन्ह आवंटित कर दिया हैं। वहीं पार्षद पद के सभी बीजेपी और कांग्रेस प्रत्याशियों के साथ निर्दलीय उम्मीदवारों को भी उनका छाप आवंटित कर दिया गया है। नाम वापसी के आखिरी दिन वार्ड नंबर 3 से कांग्रेस के उम्मीदवार जनार्दन प्रसाद यादव ने अपना नामांकन वापस लेकर के कांग्रेस के लिए मुश्किल बढ़ा दिया है। अब वार्ड नम्बर 3 मे बीजेपी प्रत्याशी एवं निर्दलीय प्रत्याशियों के बीच में सीधा मुकाबला है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शनिवार 01 फरवरी 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

हिंडनबर्ग रिसर्च भंग

अमेरिकी निवेश व अनुसंधान कंपनी हिडनबर्ग रिसर्च ने अचानक अपना कारोबार समेटने का ऐलान कर दिया। कंपनी के संस्थापक नेट एंडरसन ने अपने परिचितों, परिवार व मित्रों का हवाला देते हुए वेबसाइट पर पर्सनल नोट में लिखा- मैंने हिंडनबर्ग रिसर्च को भंग करने का फैसला किया है। नेट ने कहा यह अचानक लिया गया फैसला नहीं है। काफी सोच-समझकर लिया गया फैसला है। 2017 में हिंडनबर्ग रिसर्च का गठन करने वाले एंडरसन ने इसे अपने जीवन का एक अध्याय बताते हुए, जीवन का मुख्य केंद्र नहीं है कहा। अमेरिकी अकाउंटेंट हैरी माकरेपोलस को अपना रोल मॉडल मानने वाले एंडरसन ने ऐसे वक्त यह घोषणा की है, जब अमेरिका के नये राष्ट्रपति के तौर पर डोनाल्ड ट्रंप शपथ लेने वाले हैं। आलोचकों के अनुसार जॉर्ज सोरेस के साथ हिंडनबर्ग के कथित संबंधों व ट्रंप प्रशासन के दबाव का अंदेशा व्यक्त किया है। इस शॉर्ट सेलिंग कंपनी को 2024 में भारतीय बाजार नियामक संस्था सेबी द्वारा कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया था। क्योंकि कंपनी ने सेबी प्रमुख माधवी बुच पर वित्तीय धोखाधड़ी के आरोप मढे थे। उससे पहले हिंडनबर्ग ने देश के प्रमुख औद्योगिक समूह अडाणी पर गंभीर आरोपों द्वारा भारत में सुर्खियां बटोरी थीं। समूह के मालिक गौतम अडानी पर अपनी ही कंपनियों के शेयरों में हेराफेरी कर सौ अरब डॉलर कमाने का आरोप था। रिपोर्ट सार्वजनिक होते ही अडानी ग्रुप को डेढ़ सौ अरब डॉलर का नुकसान होते ही वह विश्व के बीस अतिसमृद्धों की सूची से बाहर हो गए। हिंडनबर्ग की रिपोटरे का हवाला देकर विपक्ष ने एकजुट होकर मोदी सरकार पर हमला बोल दिया था। हिंडनबर्ग ने अमेरिका के अलावा विदेशों की विभिन्न कंपनियों में गैर-कानूनी लेन-देन व वित्तीय अनियमितताओं का खुलासा किया, जिससे उनके शेयर्स बुरी तरह ध्वस्त होने से उन्हें जबरदस्त नुकसान झेलना पड़ा। अरबपतियों व कुलीन वर्ग के साम्राज्य को हिलाने की जरूरत पर जोर देने वाली कंपनी के इस फैसले से खुश होने वाले भले ही चुनिंदा हैं मगर हतप्रभ रहने वाले लाखों हैं। असल में यह फैसला उसे क्यों लेना पड़ा, जब तक यह स्पष्ट नहीं हो जाता, हर कोई अपने-अपने कयास लगाता रहेगा। दुनिया भर को अपने निशाने पर रखने वाले एंडरसन ने अभी अपनी भविष्य की योजनाओं के भी स्पष्ट संकेत नहीं दिए हैं। हो न हो, वह बड़ी तैयारी से कुछ अनोखा ही कर दिखाएंगे।

गांवों की खुशहाली मापने के लिए बनाएं नए मानदंड

उमेश चतुर्वेदी

घरेलू खर्च के इस नए आंकड़े को देखते वक्त हमें इस संदर्भ पर भी ध्यान देना होगा। बहरहाल हमें यह भी ध्यान देना होगा कि ग्रामीण इलाकों में खाद्यान्न विशेषकर गेहूं और चावल पर खर्च में निजी या पारिवारिक खर्च में कमी आई है। दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था वाले अपने देश की पहचान उसके गांव रहे हैं। देश सिर्फ ग्रामीण संस्कृति और कृषि व्यवस्था के लिए ही नहीं, सहकार और शिल्पकारी के लिए भी वैश्विक पहचान रखते रहे हैं। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले दौर में भी भारतीय कृषि और आर्थिकी के आधार गांव ही रहे। यह बात और है कि अंग्रेजी शासन के दौरान से भारतीय गांवों का पतन शुरू हुआ। इसके बाद भारतीय गांव गरीबी और मजबूरी के पर्याय माने जाने लगे। लेकिन घरेलू उपयोग और खर्च के ताजा सर्वेक्षण की रिपोर्ट बता रही है कि गांवों की आर्थिक तस्वीर बदलने लगी है। भारत सरकार के सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से घरेलू उपयोग और खर्च के लिए कराए गए सर्वेक्षण के अनुसार शहरी और ग्रामीण इलाकों में घरेलू खर्च का जो पहले अंतर रहता था, वह लगातार घटता चला गया है। अगस्त 2023 से जुलाई 2024 के दौरान किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक, ग्रामीण और शहरी भारत में प्रति व्यक्ति औसत मासिक खर्च 4,122 रुपये और 6,996 रुपये हो गया है। जबकि पहले यानी 2022 से 2023 के बीच यह खर्च क्रमश: 3,773 रुपये और 6,459 रुपये थाय् यानी शहरी और ग्रामीण भारत की प्रति व्यक्ति खर्च दर में बड़ा अंतर था। मोटे तौर पर यह आंकड़ा बता रहा है कि हाल के दिनों में ग्रामीण इलाकों में आर्थिक समृद्धि पहले की तुलना में बढ़ी और उस लिहाज से खर्च भी बढ़ा है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 68 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है, जबकि 32 प्रतिशत आबादी शहरों में है। स्वाधीन भारत में विशेषकर उदारीकरण के बाद जिस तरह का विकास मॉडल हमने अपनाया, उसमें शहरी विकास पर सबसे ज्यादा फोकस रहा, ग्रामीण विकास या तो रस्मी रहा या फिर उस पर फोकस शहरों की तुलना में कम रहा। शहरों की ओर रोजगार और जीवन सुविधाएं केंद्रित होती चली गईं। शिक्षा के भी बेहतर अवसर गांवों की तुलना में शहरों की ओर बढ़ते गए। इस लिहाज से ग्रामीण क्षेत्रों से सबसे ज्यादा पलायन रोजगार और शिक्षा के लिए हुआ। फिर जिन परिवारों के पास सहूलियतें बढ़ीं, उन परिवारों ने अपनी हैसियत और बजट के लिहाज से मुफीद पाए जाने वाले शहरों की ओर रहने के लिए रूख किया। यही वजह है कि शहरी और ग्रामीण आबादी का जो अनुपात आबादी के समय था, वह आज बदल चुका है। आजादी के वक्त तकरीबन 80 फीसद से ज्यादा लोग गांवों में रहते थे, अनुमान है कि वह घटते-घटते अब साठ और पैंसठ फीसद के बीच आ गई है। रिकॉर्ड पर ग्रामीण आबादी का इतना बड़ा हिस्सा भले ही गांवों में बसता हो, लेकिन हकीकत यह है कि इसमें एक बड़ा हिस्सा शहरों में रोजी-रोटी और शिक्षा के लिए कभी शौकिया तो कभी मजबूरीवश रहने को मजबूर है। इसलिए रिकॉर्ड की तुलना में वास्तविक ग्रामीण आबादी अब और भी कम हो चुकी है। घरेलू खर्च के इस नए आंकड़े को देखते वक्त हमें इस संदर्भ पर भी ध्यान देना होगा। बहरहाल हमें यह भी ध्यान देना होगा कि ग्रामीण इलाकों में खाद्यान्न विशेषकर गेहूं और चावल पर खर्च में निजी या पारिवारिक खर्च में कमी आई है। इसकी वजह यह है कि सरकार की ओर से तमाम तरह की योजनाएं और सामाजिक कल्याण कार्यक्रम चल रहे हैं। मुफ्त खाद्यान्न योजना समेत कई अन्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के जरिये मुफ्त में मिल रही चीजों की कीमतों को ध्यान में रखें तो घरेलू खर्च के ये आंकड़े ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए क्रमश: 4,247 रुपये और 7,078 रुपये हो जाते हैं। मौजूदा कीमतों के संदर्भ में देखें तो शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति खर्च पर औसत आठ और नौ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। साल 2011-12 में शहरी और खपत खर्च के बीच 84 प्रतिशत का अंतर था, जो 2022-23 में घटकर 71 प्रतिशत हो गया। जो अब 70 फीसद ही रह गया है। इन आंकड़ों से ग्रामीण इलाकों में बढ़ती खुशहाली की तसवीर सामने आती है। दिलचस्प यह है कि इस आंकड़े में खाने-पीने के अलावा की चीजों पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यह खर्च 60 और 53 प्रतिशत रहा। इसका मतलब साफ है कि अब ग्रामीण इलाकों में भी वाहन, कपड़े, बिस्तर, जूते, मनोरंजन एवं टिकाऊ आदि सामानों पर खर्च बढ़ा है। इससे साफ है कि उपभोक्तावाद ने ग्रामीण इलाकों पर भी जोरदार दस्तक दी है। वैसे ऑनलाइन स्टोर से गांवों में खरीददारी बढ़ी है और उनके डिलीवरी एजेंटों की बाइकें अब ग्रामीण इलाकों का भी खूब चक्कर लगा रही हैं। पिछले साल मई में रिजर्व बैंक ने भी ग्रामीण इलाकों में बढ़ती खपत खर्च को लेकर ऐसे ही आंकड़े जारी किए थे। इन्हीं आंकड़ों के आधार पर रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने उम्मीद जताई थी कि भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी रहेगी और देश की जीडीपी दर मे 7.3 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हो सकती है। लेकिन रिजर्व बैंक ने इसी रिपोर्ट में ग्रामीण इलाकों में बढ़ते कर्ज को लेकर भी रिपोर्ट जारी की थी। सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की रिपोर्ट में भी कर्ज को लेकर चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। इसके मुताबिक, कर्ज लेने में ग्रामीण क्षेत्रों के लोग कहीं ज्यादा आगे हैं। गांवों में प्रति एक लाख लोगों में 18,714 लोग ऐसे हैं, जिन्होंने कोई न कोई कर्ज ले रखा है, जबकि शहरों में यह आंकड़ा 17,442 प्रति लाख ही है। साफ है कि उपभोक्तावाद ग्रामीण संस्कृति को बदलने में बड़ी भूमिका निभा रहा है। कर्ज कभी गांवों के लोगों के लिए सिरदर्द होते थे, इसलिए वहां बचत केंद्रित आर्थिकी पर जोर था। लेकिन अब इसमें गिरावट आई है। इसका मतलब साफ है कि गांवों में खर्च भले ही बढ़ रहा है, लेकिन यह भी सच है कि गांवों की तसवीर अभी कम से कम वैसी नहीं हो पाई है, जिस स्तर पर शहरी तसवीर है। गांवों का समृद्ध होना जरूरी है। हाल के दिनों में जनसंख्या को बढ़ाने और न बढ़ाने को लेकर सियासी तौर पर अपने-अपने तर्क दिए जा रहे हैं। इन तर्कों के अपने आधार हो सकते हैं। लेकिन इससे शायद ही कोई इनकार करेगा कि भारत के शहरों की सांस अगर फूल रही है तो इसकी बड़ी वजह उनकी ओर बेतहाशा हो रहा पलायन और उस बड़ी जनसंख्या के लिए इस्तेमाल हो रहे उपभोक्ता वस्तुओं का बड़ा योगदान है। भारत में आबादी बढ़ाने की जगह आबादी के समन्वित और संतुलित वितरण की जरूरत ज्यादा है। ग्रामीण इलाकों में आबादी को रोकने की कोशिश होनी चाहिए। ग्रामीण आबादी को बुनियादी शिक्षा और रोजगार गांवों या उसके आसपास ही उपलब्ध कराने की नीतियों पर आगे बढ़ना चाहिए। अगर ऐसा होगा तो निश्चित तौर पर आबादी को संतुलित किया जा सकेगा। तब गांव आबादी विहीन नहीं होंगे और शहरों पर आबादी का असंतुलित बोझ नहीं बढ़ेगा। गांवों में हो रही खपत और खर्च को लेकर आ रहे आंकड़ों का पहला असर यही होना चाहिए कि गांवों में आबादी रूके। लेकिन ऐसा होता नजर नहीं आ रहा है। ग्रामीण इलाके में बढ़ते खर्च से अव्वल तो गांवों में रोजगार के साधन बढ़ने चाहिए। लेकिन इस दिशा में ठोस बदलाव होते नजर नहीं आ रहे। बेशक आज आजादी के बाद के दौर की तरह के बदहाल गांव नहीं हैं। बेशक शहरों जितना उसे बिजली नहीं मिलती, लेकिन पहले की तुलना में अब गांवों को भी बिजली ज्यादा मिल रही है। गांवों में भी उपभोक्ता वस्तुएं पहुंची हैं। इससे बेशक पारंपरिक संस्कृति चोट भले ही पहुंची हो। यह भी सच है कि ग्रामीण विकास और दूसरी कल्याण योजनाओं के जरिए गांवों में केंद्रीय और राज्य सरकारों की ओर से पैसा जा रहा है। लेकिन यह भी सच है कि उस पैसे का एक बड़ा हिस्सा जमीनी स्तर पर खर्च होने की बजाय नौकरशाही और राजनीतिक रिश्वत के रूप में शहरी इलाकों में ही रूक रहा है और वहीं निवेशित हो रहा है। इस लिहाज से देखें तो ग्रामीण इलाके में जैसी समृद्धि दिखनी चाहिए।

आलेख

राजनीति की गहरी परतों से रूबरू कराता पाताल लोक

पंकज दुबे

'पाताल लोक' के दूसरे सीज़न ने मनोरंजन के स्तर को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। जहां पहला सीज़न अपने उत्कृष्ट लेखन और दिलचस्प किरदारों के लिए मशहूर हुआ था, वहीं दूसरा सीज़न उस विरासत को और भी भव्यता के साथ आगे बढ़ाता है। इस बार की कहानी इंस्पेक्टर हाथीराम चौधरी (जयदीप अहलावत) और एसीपी अंसारी (इश्वाक सिंह) के ईर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी अपनी जांच के दौरान ऐसे मोड़ पर पहुंचते हैं, जहां उनकी राहें आपस में टकरा जाती हैं। 2025 की शुरुआत, दर्शकों के लिए वेब सीरीज़ की दुनिया में एक सुनहरा दौर लेकर आई है। पहले विक्रमादित्य मोटवानी की 'ब्लैक वारंट' ने दर्शकों का मन मोहा, और अब बहुप्रतीक्षित सीरीज़ 'पाताल लोक' के दूसरे सीज़न ने मनोरंजन के स्तर को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। जहां पहला सीज़न अपने उत्कृष्ट लेखन और दिलचस्प किरदारों के लिए मशहूर हुआ था, वहीं दूसरा सीज़न उस विरासत को और भी भव्यता के साथ आगे बढ़ाता है। इस बार की कहानी इंस्पेक्टर हाथीराम चौधरी (जयदीप अहलावत) और एसीपी अंसारी (इश्वाक सिंह) के ईर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी अपनी जांच के दौरान ऐसे मोड़ पर पहुंचते हैं, जहां उनकी राहें आपस में टकरा जाती हैं। इस टकराव के बाद उन्हें नागालैंड की ओर रुख करना पड़ता है, जहां एक बड़ी राजनीतिक और सामाजिक समस्या उभरती हुई दिखाई देती है। कहानी नागालैंड और दिल्ली के बीच घूमती है, जिसके केंद्र में नॉर्थ ईस्ट के एक बड़े लीडर की देश की राजधानी में हुई राजनीतिक हत्या है, जिससे इस कहानी की शुरुआत होती है। सीरीज़ में तीन मुख्य पहलुओं को गहराई से उजागर किया गया है। पहला है मानवीय संबंधों की जटिलता। इस कहानी में ह्यूमन रिलेशन्स और उनकी बारीकियों पर बहुत गहराई से काम किया गया है। इस कहानी का लेखन और इसकी मेकिंग इसे बस एक फ़िल्मी शो बनाने से बचाती है और ज़मीन से जोड़कर ही नहीं, बल्कि गाड़कर रखती है। फिर चाहे नागालैंड का केस हो और वहां मिले लोग या फिर ज़िंदगी की उथल पुथल में कई बार चक्की में पिसते अनजान और मासूम लोग, सभी किरदारों पर काफी एम्पथी से नज़र डाली गई है। दूसरा अहम् पक्ष है, 'दोस्ती का महत्व और ताकत'। इस कहानी में किरदारों की दोस्ती और उस दोस्ती की ताकत को काफी वास्तविक तरीके से रेखांकित किया गया है। कहानी के सभी सबप्लॉट्स इतने ज़मीनी और आम ज़िंदगी से जुड़े हुए लगते हैं, जैसे कि तमाम घटनाक्रम अपने आस पास के ही हों। पाताल लोक की कहानी का तीसरा मज़बूत आयाम है इसके मुख्य किरदार इंस्पेक्टर हाथीराम चौधरी का अपने कर्तव्यों को निभाने का जुनून। वो हमेशा अपनी दाल रोटी चलाने वाली नौकरी और समाज व इंसानियत के प्रति अपनी ड्यूटी को अलग अलग परिभाषित करके जीता है। उसके लिए उसकी प्रतिबद्धता सिर्फ़ ऑफिस तक सीमित नहीं रह कर उसके दिल, उसकी भावना से जुड़े होते हैं और वो बिना अपनी परवाह किये बिना उसे सुलझाने में लगा रहता है। 'पाताल लोक' के क्रिएटर हैं सुदीप शर्मा जो इस ज़बरदस्त कहानी के लेखक भी हैं। सुदीप शर्मा के बारे में ये बता देना ज़रूरी है कि उन्होंने इससे पहले नेटफ़्लिक्स के लिए 'कोहरा' नाम की एक सीरीज़ बनाई थी जो कि पंजाब की पृष्ठभूमि पर थी और काफ़ी सराही गई थी। बहरहाल, 'पाताल लोक' के औसतन 45 मिनटों वाले आठ एपिसोड्स के निर्देशक हैं अविनाश अरुण द्वारे। इस सीरीज़ में मुख्य कलाकार हैं जयदीप अहलावत, इश्वाक सिंह, गुलपनाग, तिलोत्तमा शोम, मरेनला इम्सॉन्ग, एलसी सेकहोसे, नागेश कुकुनूर और कई अन्य छोटे बड़े लेकिन सब के सब दिग्गज कलाकार। जयदीप अहलावत ने फिर से यह साबित किया है कि वे इस समय के सबसे बेहतरीन अभिनेताओं में से एक हैं। उनके किरदार, इंस्पेक्टर हाथीराम चौधरी, की संवेदनशीलता और कड़वी सच्चाई को उन्होंने इतनी सजीवता से निभाया है कि दर्शक उनके हर कदम पर साथ चलने को मजबूर हो जाते हैं। उनकी डायलॉग डिलीवरी, हाव-भाव और भावनात्मक गहराई ने शो को और भी यादगार बना दिया है। उनके आलावा तिलोत्तमा शोम और सह कलाकारों की प्रभावशाली उपस्थिति है। तिलोत्तमा शोम, जो पुलिस अधीक्षक मेघना बरुआ के किरदार में हैं, ने अपने प्रदर्शन से शो को एक अलग स्तर पर पहुंचा दिया है।

मंदी के चपेट में आने वाली है भारतीय अर्थव्यवस्था

सतीश सिंह

बजट सप्ताह के पहले दिन यानी 27 जनवरी को शेयर बाजार में निवेशकों को 9.5 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। विगत कुछ दिनों से निवेशकों को शेयर बाजार में लगातार नुकसान हो रहा है। हालांकि, इसका कारण देश में मंदी की आहट कतई नहीं है। इसका मुख्य कारण अमेरिका के सेंट्रल बैंक द्वारा भारत में बजट पेश करने से पहले नीतिगत निर्णय की घोषणा करने की संभावना, चीन के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस स्टार्टअप डीपसीक मॉडल की लोकप्रियता में वृद्धि, भारतीय कंपनियों के दिसम्बर तिमाही के नतीजे का अपेक्षित नहीं रहना आदि हैं। दरअसल, भू-राजनैतिक संकट, लाल सागर में हूती विद्रोहियों की उपस्थिति आदि के कारण भारत के आयात-निर्यात तथा आपूर्ति श्रृंखला पर नकारत्मक प्रभाव पड़ रहा है और आर्थिक गतिविधियों में कमी आने के कारण कंपनियों का तिमाही मुनाफा कम हो रहा है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने 7 जनवरी 2025 को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का वित्त वर्ष 2024-25 के लिए पहला अग्रिम अनुमान जारी किया और इस अवधि में रियल जीडीपी वृद्धि दर के 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है, जो पिछले वित्त के दौरान 8.2 प्रतिशत रही थी। वहीं, भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान रियल जीडीपी के 6.6 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ने का अनुमान जताया है। एनएसओके अनुसार नॉमिनल जीडीपी वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान 9.7 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है, लेकिन भारत में जीडीपी गणना एवं लेखा-जोखा रियल जीडीपी के संदर्भ में की जाती है। भारत की अर्थव्यवस्था मूल रूप से खपत आधारित है, लेकिन पिछले कुछ महीनों में खपत में उल्लेखनीय कमी आई है। मुद्रास्फीति के कारण उपभोक्ताओं की क्रय क्षमता कम हुई है। किसी की क्रय शक्ति को निर्धारित करने में मुद्रास्फीति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके बढ़ने पर वस्तु एवं सेवा दोनों की कीमतों में इजाफा होता है, जिससे व्यक्ति की खरीदारी क्षमता कम हो जाती है और वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग घट जाती है। फिर, उनकी बिक्री कम होती है, उनके उत्पादन में कमी आती है, कंपनी को घाटा होता है, कामगारों की छंटनी होती है, रोजगार सृजन में कमी आती है आदि। रेपो दर फरवरी 2023 से 6.5 प्रतिशत के स्तर पर बरकरार है, जिसके कारण उधारी दर भी उच्च स्तर पर बनी हुई है। 15 नवम्बर 2024 तक ऋण उठाव घटकर 11.1 प्रतिशत रह गया, जो विगत वर्ष आलोच्य अवधि में 20.6 प्रतिशत रहा था। इस अवधि में जमा वृद्धि दर में भी उल्लेखनीय कमी आई है और इसकी औसत वृद्धि दर मार्च से महज 6.7 प्रतिशत है। बैंक जमा में आई कमी की प्रतिपूर्ति के लिए बैंक सरकारी बॉन्डस को परिपक्वता तिथि से पहले भुना रहे हैं। फिलवक्त, मुद्रास्फीति के कारण जीडीपी वृद्धि दर में गिरावट दर्ज की गई है। हालांकि, वित्त वर्ष 2025 और वित्त वर्ष 2026 में मुद्रास्फीति के भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित सहनशीलता सीमा के अंदर रहने के आसार हैं, लेकिन इसके कई दुष्परिणामों को दृष्टिगत करके मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) और केंद्रीय बैंक, रेपो दर में कटौती करने से गुरेज कर रही है। अगर हम वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर से भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना करें तो हमारी अर्थव्यवस्था वैश्विक स्तर से बहुत ऊपर है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के अनुसार 2024 में वैंक जीडीपी वृद्धि दर 3.2 प्रतिशत रही और 2025 में 3.3 प्रतिशत रह सकती है। वहीं, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के मुताबिक वैंक अर्थव्यवस्था 2024 में 3.1 प्रतिशत और 2025 में 3.2 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है। दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका से भी भारतीय अर्थव्यवस्था बेहतर स्थिति में है और आगामी वर्षों में भी इसके मजबूत बने रहने के आसार हैं। वित्त वर्ष 2024 के दौरान अमेरिका में विकास दर के 2.7 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 2.0 प्रतिशत रहने का अनुमान है। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर के 6.7 प्रतिशत रहने और दूसरी तिमाही में 5.4 प्रतिशत रहने के बाद कुछ अर्थशास्त्री और कुछ देसी एवं वैंक एजेंसियां भारतीय अर्थव्यवस्था के मंदी के गिरफ्त में आने की बात कर रहे हैं, लेकिन मंदी की परिभाषा के अनुसार जब किसी देश की वृद्धि दर सुस्त पड़ने लगती है, बेरोजगारी दर में इजाफा होता है और महंगाई दर ऊंची बनी रहती है तो वह देश मंदी की गिरफ्त में आ जाता है। यह भी माना जाता है कि किसी देश की जीडीपी में अगर दो तिमाहियों में लगातार गिरावट दर्ज की जाती है तो भी वह देश मंदी की चपेट में आ जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में मंदी के लक्षण भारतीय अर्थव्यवस्था में दृष्टिगोचर हो रहे हैं या नहीं इस बात की गहन पड़ताल करने की जरूरत है। जल्दबाजी में यह कहना कि भारतीय अर्थव्यवस्था मंदी की गिरफ्त में आने वाली है, गलत होगा। कोरोना महामारी के दौरान अप्रैल 2020 में बेरोजगारी दर 23.50 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच गई थी और सबसे कम सितम्बर 2022 में 6.40 प्रतिशत के स्तर पर रही थी। अभी मुद्रास्फीति की वजह से न कोई कंपनी बंद हुई है और न ही कामगारों की छंटनी की गई है। बेशक, चालू वित्त वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर के घटकर 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया गया है, लेकिन विगत 2 तिमाहियों में जीडीपी में गिरावट दर्ज नहीं हुई है। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में यह 6.7 प्रतिशत और दूसरी तिमाही में 5.4 प्रतिशत रही है, लेकिन वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान जीडीपी वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही थी। अभी आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती आने का एक बड़ा कारण मुद्रास्फीति है और शेयर बाजार में निवेशकों के पैसे डूबने के दूसरे कारण हैं। रेपो दर में एक लंबे समय से कटौती नहीं की गई है, लेकिन रिजर्व बैंक के गवर्नर में बदलाव आने के बाद आगामी मौद्रिक समीक्षा में रेपो दर में कटौती करने के आसार है। तदुपरांत, उधारी के उठाव और आर्थिक गतिविधियों दोनों में तेजी आएगी। इससे इतर, अभी भी भारत की जीडीपी वृद्धि दर विश्व के प्रमुख देशों और औसत वैंक विकास दर से ज्यादा है।

सिद्धारमैया पर भ्रष्टाचार के आरोपों पर कांग्रेस चुप क्यों

योगेंद्र योगी

दरअसल कमजोर होती कांग्रेस में इतने क्षत्रप पनप गए हैं कि पार्टी चाह कर भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ऐसे में भ्रष्टाचार हो या पार्टी विरोधी गतिविधियां, कांग्रेस खिसकते जनाधार के कारण यह जहर पीने को मजबूर हो गई है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दिल्ली में अपनी पहली चुनावी रैली को संबोधित करते हुए केजरीवाल पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल पीएम मोदी की तरह झूठे वादे करते हैं। केजरीवाल ने कहा था कि भ्रष्टाचार मिटाएंगे लेकिन क्या दिल्ली में भ्रष्टाचार हटा क्या? अडानी पर भी केजरीवाल कुछ भी नहीं बोलते हैं। राहुल गांधी ने जब केजरीवाल पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए उसी समय कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और अन्य के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय ने (ईडी) ने मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) मामले के संबंध में 300 करोड़ रुपये के बाजार मूल्य वाली 142 अचल संपत्तियों को जब्त कर लिया। ईडी के बेंगलुरु जोनल कार्यालय ने धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत इन संपत्तियों को जब्त किया। ईडी के अनुसार, ये संपत्तियां विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर पंजीकृत हैं जो रियल एस्टेट व्यवसायी और एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं। ईडी ने लोकायुक्त पुलिस मैसूर द्वारा भारतीय दंड संहिता, 1860 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की विभिन्न धाराओं के तहत सिद्धारमैया और अन्य के खिलाफ दर्ज की गई प्राथमिकी के आधार पर जांच शुरू की थी। आतंरिक तौर पर देखें तो राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे में इतना साहस भी नहीं हो सका कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को मुख्यमंत्री पद से हटाना तो दूर बल्कि कारण बताओ नोटिस तक जारी कर सकें। दरअसल कांग्रेस को अंदाजा है कि यदि सिद्धारमैया से कुछ भी पूछा गया तो विद्रोह की नौबत आ जाएगी। ऐसे में कांग्रेस ने इस मुद्दे पर चुप्पी साधे रखना ही सही समझा। कांग्रेस को शायद यह बात समझ में नहीं आई कि उसकी चुप्पी ही उसे अपराधी बना रही है। यही वजह है कि भाजपा ने विगत चुनावों में भ्रष्टाचार के मुद्दों पर कांग्रेस की बखिया उधडने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। दरअसल कमजोर होती कांग्रेस में इतने क्षत्रप पनप गए हैं कि पार्टी चाह कर भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ऐसे में भ्रष्टाचार हो या पार्टी विरोधी गतिविधियां, कांग्रेस खिसकते जनाधार के कारण यह जहर पीने को मजबूर हो गई है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इसका

उदाहरण हैं। सरेआम पार्टी के निर्णयों की उपेक्षा करने के बावजूद कांग्रेस गहलोत के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर सकी। इसी तरह सचिन पायलट भी पार्टी खुल कर पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल रहे, किन्तु कांग्रेस उनकी तरफ से भी आंखे फेरे रही है। गहलोत और पायलट के अंदरूनी सता संघर्ष का ही नतीजा रहा कि कमजोर कांग्रेस राजस्थान विधानसभा चुनाव में भाजपा का मुकाबला नहीं कर सकी और करारी शिकस्त खाने को मजबूर हुई। कांग्रेस में भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरने वाले सिद्धारमैया अकेले नेता नहीं हैं। पार्टी में नीचे से लेकर शीर्ष तक नेताओं के खिलाफ गंभीर मामले चल रहे हैं। यहां तक कि पार्टी चलाने वालीं कार्यकारी अध्यक्ष सोनिया गांधी और राहुल गांधी भी जमानत पर चल रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी भी कई भाषणों में कांग्रेस के शीर्ष नेताओं के जमानत पर बाहर होने पर चुटकी भी लेते रहे हैं। संसद के सत्र के दौरान जब कांग्रेस नेता अधीर रंजन ने कहा था कि भ्रष्टाचार के मामले हैं तो गिरफ्तार क्यों नहीं करते, तब पीएम मोदी ने हंसते हुए कहा था- जमानत पर हैं तो एन्जॉय करिए। इसी तरह कांग्रेस मौके-बेमौके ऐसे मुद्दें पर उपहास का पात्र बनती रही है। भ्रष्टाचार के मामलों को देखें तो दिल्ली से लेकर हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और गुजरात से लेकर महाराष्ट्र तक के बड़े कांग्रेस नेता सीबीआई, इनकम टैक्स और ईडी जैसी एजेंसियों के निशाने पर रहे हैं। हालांकि कांग्रेस अपने नेताओं पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से इनकार करती है। नेशनल हेराल्ड केस-2011 में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, उनके बेटे राहुल गांधी और अन्य कांग्रेस नेता फंसे हैं। बीजेपी के राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी का आरोप है कि यह सब कुछ दिल्ली में बहादुर शाह जफर मार्ग पर स्थित हेराल्ड हाउस की 16 सौ करोड़ रुपये की बिल्डिंग पर कब्जा करने के लिए किया गया। वर्ष 2013 में अगस्ता वेस्टलैंड वीआइपी हेलीकॉप्टर खरीद घोटाला में सीबीआई और दूसरी केंद्रीय एजेंसियां अहमद पटेल पर इतालवी चॉपर कंपनी अगस्ता वेस्टलैंड से कमीशन लेने के आरोपों की जांच कर रही हैं। इस मामले में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ के भांजे रतुल पुरी भी फंसे हैं। राजस्थान में एंबुलेंस घोटाला में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट भी आरोपी हैं। ये मामला 2010 से लेकर 2013 तक एनआरएचएम के तहत एंबुलेंस खरीदने में हुई धांधली का है। ईडी अब तक 12 करोड़ की संपत्तियां आरोपियों से जब्त कर चुकी है। कांग्रेस के दिग्गज नेता डीके शिवकुमार के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति दर्ज करने का मामला चल रहा है। 2017 में इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने डीके शिवकुमार के 64 ठिकानों पर जबर्दस्त छापेमारी की थी। टैक्स चोरी की शिकायतों पर यह कार्रवाई हुई थी। हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस नेता वीरभद्र सिंह के खिलाफ भी केंद्रीय एजेंसियों ने छापेमारी की।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शनिवार 01 फरवरी 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

जिसके जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरु नहीं : निर्यापक श्रमण श्री समतासागर जी महाराज

डोंगरगढ़ (विश्व परिवार)। गुरु की महिमा बरनी न जाऐ, गुरु नाम जपो मन बचन काय गुरु भारतीय संस्कृति की खोज है, दुनिया के पास टीचर तो है लेकिन गुरू नहीं, गुरु तो ज्ञानी, पारखी, उदार हृदय, तथा गम्भीर एवं रहस्य उदघाटक होते है, वह साक्षात प्रभु की तस्वीर होते है उपरोक्त उदगार निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर महाराज ने चंद्रगिरी तीर्थ पर प्रात:कालीन धर्म सभा में प्रभु और गुरु के महत्व को दर्शाते हुये व्यक्त किये मुनि श्री ने कहा कि जिसका कोई गुरु नहीं उसका जीवन शुरु नहीं जिंदगी की शुरुआत और जिंदगी की पहुंच गुरु के माध्यम से ही होती है।

आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागरजी महामुनिराज में आचार्य परमेष्ठी के रुप में जितने गुण होंना चाहिये वह सभी गुण उनके अंदर विद्यमान थे वह श्रैष्ठ संघ नायक थे, अध्यन अध्यापन की दृष्टी से वह उपाध्याय परमेष्ठी तथा निरंतर आत्मसाधना के रुप आत्मोनुखी होकर श्रैष्ठ साधु की चर्या का पालन करते थे अर्थात पंचपरमेष्ठी के तीन गुण आचार्य उपाध्याय एवं साधू के गुण उनमें एक साथ समाहित होते थे, संघ उनके साथ था वह संघ के साथ कभी नहीं रहे, उन्होंने अपने आचार्यश्री ज्ञान सागर महाराज की प्रेरणा से त जिंदगी अपने कर्तव्य का पालन किया तथा जैसा उनके गुरु ने कहा था बैसा ही संघ को गुरुकुल का रुप प्रदान किया आज वह हम सभी के कुलगुरु के रुप में आने बाली कयी पीड़िओं में कुलगुरु के रूप में हम सभी के हृदय में विराजमान रहेंगे, उन्होंने चतुर्थकालीन गुरुकुल परंपरा तथा विचारधारा को आगे बडाया वर्तमान में वह प्रतिभास्थली, त्यागीवृतिआश्रम, श्राविकाश्रम, वृद्धावस्था में संल्लेखना समाधि हेतु सन्यास दीक्षा तथा उनकी झलक श्रमण एवं श्रमणिओं में झलकती है। मुनि श्री ने गुरवर के जीवन का उल्लेख करते हुये कहा कि उनके जीवन मे शिष्यों के प्रति करूणा और वातसल्य भाव रहा तो समय समय पर कठोरता भी रही वह अनुशासन प्रिय थे मर्यादाओं के साथ स्वंय रहते तथा संघ को भी अनुशासन तथा मर्यादा में रखना पसंद करते थे मुनि श्री ने कुंडलपुर से विहार के पश्चात का एक प्रसंग सुनाते हुये कहा कि जब समस्त मुनिसंघ का कुंडलपुर से विहार हुआ तो गुरुदेव ने भी स्वास्थ्य की प्रतीकूलता होते हुये भी अपना विहार किया और अस्वस्थता के कारण शास्त्रों में उल्लेखित डोली का भी उपयोग किया उनकी अस्वस्थता का समाचार जब हम लोगों को बांदकपुर में मिला और जानकारी मिली कि उनकी आहारचर्या आज टोलनाका पर होंनी है, तो हम सभी से रहा नहीं गया और हम सभी मुनिराजों ने तय किया जिसमें महासागर जी, निष्कंप सागर जी,

वीरसागर जी विशाल सागर जी, प्रणम्य सागर जी आदि मुनि तथा ऐलक निश्चयसागर जी, सभी ने एक साथ जाने का मन तो बना लिया लेकिन अंदर ही अंदर डर भी लग रहा था कि गुरु आज्ञा का उलंघन करने का गुरु जी पास से निकल रहे है अनुमति तो मिलेगी नहीं लेकिन अस्वस्थता का समाचार सुन रहा भी नहीं जाता अत: सभी ने विना अनुमति के जाना ही श्रैष्ठ समझा और हम सभी मुनिराजों ने आहारचर्या कर पांच छै किलोमीटर दूर टोलनाका पर पहुंच गये ज्येष्ठ निर्यापक मुनि श्री योगसागर जी को संदेश भेज दिया था लेकिन अंदर ही अंदर सभी को डर भी था कि पहल कौन करेगा? सभी ने हमें ही आगे बड़ाया उस समय गुरूदेव दीवारों की ओर मुख करके लेटे थे, हम भी हिम्मत करके गुरु चरणों में जाकर बैठ गये और धीरे से निवेदन किया कि आपकी अस्वस्थता का समाचार सुनकर के हम सभी का मन व्याकुल था इसलिये हम लोग विना संकेत के यंहा पर चले आये हे, हम जानते है यह हमारी गल्ती है लेकिन इतने पास से आप निकल रहे है तो हम सभी का मन नहीं माना और हमारे इतना कहने पर आचार्य श्री ने आंखें खोली और वह उठकर बैठ गये और हम सभी की ओर देखकर मुस्कुराते हुये आशीर्वाद दिया तथा राजवार्तिक ग्रंथ का उदाहरण देते हुये कहा कि सुनो %भक्ती को एकांत वाची बताया है और वह सम्यक् दर्शन का अंग है बातावरण अनुकूल हुआ और गुरुदेव से चर्चा शुरु हुई धीरे धीरे हम लोगो ने माहोल बनाया और आगे विहार में गुरूदेव की डोली उठाने का सौभाग्य सभी मुनिराजों ऐलक जी तथा सभी ब्रहम्चारी को मिल गया और हम लोग 9 कि. मी.तक चले आगे रात्री विश्राम हुआ हम सभी लोग भी रूक गये लेकिन आचार्य श्री की आज्ञा नहीं थी और उन्होंने सुवह सुवह हम लोगों की तरफ देखा तक नहीं हम लोगों ने भक्ती की और विना आनुमति के रात्री विश्राम किया है इसके लिये क्षमा मांगते हुये कहा कि हम लोग सभी आपकी आज्ञानुसार बापिस जा रहे है..गुरुदेव मुस्कराये और आशीर्वाद दिया जाओ जाओ अच्छे से जाना।

मुनि श्री ने कहा कि यह भी आचार्य श्री का गुण था वह अंदर से जितने मृदु थे तो ऊपर से उतने ही कठोर थे उनको यह लगा कि यदि अभी कठोरता नहीं दिखाई तो कंही हम लोग फिर से पीछे न लग जाऐं। अंत में यह कहते हुये मुनि श्री ने अपनी बाणी को विराम दिया हृदय में हो प्रभु का आसन मन में हो गुरु का शासन तभी बनता है जीवन पावन दयोदय महासंघ के राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया इस अवसर पर मुनि श्री आगम सागर, मुनि श्री पुनीत सागर ऐलक श्री धैर्य सागर ऐलक श्री निश्चयसागर ऐलक श्री निजानंद सागर, सहित आर्यिकारत्न गुरुमति माताजी, दृणमति माता जी, आदर्शमतिमाताजी, चिंतन मतिमाताजी सभी माताजी संघ सहित तथा संघस्थ ब्रहम्चारी एवं बहनें उपस्थित थी। गुरुवर बात जरा गहरी है, गुरुवर बात जरा गहरी है, क्योंकि हम सबकी जिन्दगी आप में ही ठहरी है। अध्यक्ष सेठ सिंघई किशोर जैन, निर्मल जैन, सुभाष चन्द जैन, चंद्रकांत जैन, सप्रेम जैन, डोंगरगढ़ जैन समाज के अध्यक्ष श्री अनिल जैन, कोषाध्यक्ष श्री जय कुमार जैन, सचिव श्री यतीश जैन, सुरेश जैन, निशांत जैन, विद्यातन पदाधिकारी श्री निखिल जैन, दीपेश जैन, अमित जैन, सोपान जैन, जुग्गू जैन, यश जैन, प्रतिभास्थली के अध्यक्ष श्री पप्पू भैया सहित समस्त पदाधिकारी उपस्थित थे। विद्यातन के अध्यक्ष श्री विनोद बडजात्या ने बताया कि 1 फरवरी 2025 से 6 फरवरी 2025 तक होने वाले प्रथम समाधि स्मृति महोत्सव कि पूर्ण रूपरेखा बना ली गयी है जिसमे सभी साथियों को कार्यविभाजन कर आवास, यातायात, भोजन, सिक्यूरिटी आदि व्यवस्था सुनिश्चित कर दी गयी है एवं देश ङ्क विदेश के सभी लोगो से करबद्ध निवेदन किया है कि सभी उक्त कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कर धर्म लाभ लेवे। उक्त जानकारी निशांत जैन (निशु) द्वारा दी गयी है।

-निशांत जैन निशु

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी ने जिनवाणी को ताम्र पत्र पर अंकित कराने की प्रेरणा देकर जैन धर्म पर महान उपकार किया है : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

पारसोला (विश्व परिवार)। वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी 33 साधु सहित पारसोला में विराजित है।पारसोला दिगंबर जैन समाज अनन्य गुरुभक्त समाज है, जिन्होंने किए संकल्प वचन का पालन कर आचार्य श्री शांति सागर जी के आचार्य पद शताब्दी प्रतिष्ठापना महोत्सव अंतर्गत शांतिसागर जी उद्यान में प्रतिमा विराजमान कर उद्यान का लोकार्पण कराया। इसके पूर्व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पश्चात आचार्य श्री शांति सागर जी की प्रतिमा समवशरण मंदिर में स्थापित की। पूरे देश में पारसोला प्रथम नगर है जहां पर आचार्य श्री शांतिसागर जी की दो प्रतिमाएं विराजित हुई है। यह मंगलधर्म देशना पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने दो दिवसीय कार्यक्रम के समापन अवसर पर महती धर्म सभा में व्यक्त की ब्रह्मचारी गजु भैया राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि आचार्य श्री शांति सागर जी ने गृहस्थ अवस्था में भी पशुबलि तथा श्रमण अवस्था में बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने की प्रेरणा दी। आपने जिनवाणी के संरक्षण के लिए ताम्र पत्र पर अंकित करने की प्रेरणा दी मुंबई, आरा और फल फ़लटन तीन स्थानों पर तांबे के

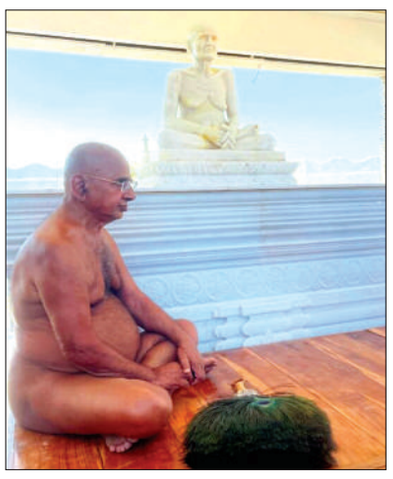

पत्रों पर जिनवाणी के प्रमुख ग्रंथो को अंकित कराया है। पारसोला समाज ने उद्यान निर्माण कराया है यद्यपि निर्माण कार्य जारी है बड़े हाल भी बने हैं इसमें आचार्य शांति सागर जी के जीवन को दर्शाने वाले चित्रों का चित्रांकन जरूरी है ताकि समाज चित्रों के माध्यम से आचार्य श्री शांति सागर जी के जीवन चारित्र को देखे, समझे और जीवन में उतारने का प्रयास करें, तभी यह उद्यान बनाने की सार्थकता होगी। जयंतीलाल कोठारी ऋषभ पचोरी संपत सेठ अमरेश सेठ ने बताया कि आज डॉ. रेखा जैन जयपुर, जयंतीलाल कोठारी, ऋषभ पचौरी वर्धमान युवा मंडल सहित अनेक लोगों ने कमरे बनाने की स्वीकृति प्रदान की। आचार्य संघ सानिध्य में नवीन धार्मिक पुस्तकों का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इसके पूर्व प्रात: प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पारसोला में दो दिवसीय कार्यक्रम अन्तर्गत पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी संघ सानिध्य में 31 जनवरी को प्रात: श्रीजी के पंचामृत अभिषेक पूजन के पश्चात आचार्य श्री वर्धमान सागर जी संघ सानिध्य में संहितासूरी प्रतिष्ठाचार्य पण्डित हंसमुख शास्त्री धरियावद के निर्देशन में पंडित कीर्तिश पारसोला, पण्डित विशाल के सहयोग से आचार्य श्री शांतिसागर जी की प्रतिमा का आकार शुद्धिकरण वास्तु पूजन आचार्य श्री शांतिसागर जी की महापूजन हवन कार्यक्रम हुआ बेदी शुद्धिकरण कार्य एवं कलश यात्रा पश्चात आचार्य श्री शांति सागर जी के बिंब प्रतिमा की स्थापना आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सानिध्य में की गई।

विचित्र बाते प्रणेता मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी महाराज का पंढरपूर में मनाएंगे 34वॉ अवतरण दिवस : मनाली पाटणी

पंढरपूर/महाराष्ट्र (विश्व परिवार)। चर्या शिरोमणी आचार्य भगवन श्री विशुद्धसागर महाराज जी ससंघ के सानिध्य में 1 फरवरी 2025 से आढीव पंढरपूर में पंचकल्याणक महोत्सव प्रारंभ होनेवाला हैं। रांची की मुनी श्री सर्वार्थसागर महाराज जी की परमभक्त मनाली पाटणी ने अवगत कराया कि, आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी द्वारा दीक्षित विचित्र बाते प्रणेता मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी की प्रेरणा से विचित्र बातें आज जैन धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना सोशल मीडिया के माध्यम से हो रही हैं। 34 वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में मुनी श्री सर्वार्थ सागर महाराज जी के गुणों के साथ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हैं।

आया है आराध्य देव के जन्म दिवस का उत्सव बनाया है जिन्होंने इस नर जीवन को अमृत्तोसव लुटाते है जो वात्सल्य हम सब पर बेशुमार देख कर जिनकी मुद्रा हो जाता भव्यों का बेड़ा पार मुस्कान से जिनकी मुखरित होता है सौम्य दर्श देख जिनकी छबि छा जाता हर्ष ही हर्ष ऐसे उपकारी गुरु के अवतरण दिवस पर नमन अनंत बार पूर्णायु हो जीवन और निरत वृद्धि कर संयम में पाओ शीघ्र मोक्ष द्वार। युवाओं के प्रेरणा पुंज, धरती के ऐसे

देवता जो तन से विशुद्ध, मन से विशुद्ध, चर्या से विशुद्ध और चर्चा से विशुद्ध ऐसे वितराग आचार्य भगवन विशुद्ध सागरजी महाराज है द्य आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज ये एक ऐसे संत है जिनकी आध्यात्म की गेहराई से सत्यार्थ का बोध होता है द्य ये ये एक ऐसे संत है जिनके चरणो में शीतलता मिलती है। जिनकी एक मुस्कुराहट से सारी थकान मीट जाती है द्य ये ऐसे संत है जिनके रोम रोम में णमोकार मंत्र की मेहक है।

मुनि श्री सर्वार्थ सागर जी आज से 34 वर्ष पूर्व वसंत की बहार में एक भावी संत का जन्म हुआ था, जिसको पाकर परिजन ही नही नगर का जन जन मुस्कुराया था और वह वसुधा थी पन्ना नगर के समीप बसे ग्राम सलेहा (म. प्र) की। सौभाग्य शाली दंपत्ति श्रीमान प्रमोद जी जैन एवं श्रीमति सुशीला जी जैन के आंगन में फिर एक बार खुशियां छाई थी। 1 फरबरी 1991 को जब तीसरी संतान के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी, और उस सुंदर बालक का माता पिता ने नाम रखा अर्पित, भला उस समय कौन जानता था कि एक दिन अर्पित जिनशासन को समर्पित हो जाएगा, बड़े भाई और बड़ी बहिन का लाडला प्यारा छोटा भाई अर्पित बाल्यकाल से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि का धनी था। घर के सभी काम अग्रणी होकर जो करते थे, चारों भाई बहन के खेल कूद हल चल से घर का वातावरण खुशियों से भरा रहता था। यूं तो बालक अर्पित मंदिर जाता था लेकिन ज्यादा विशेष रुचि नहीं रहती थी, यूं ही समय बीतता गया और अर्पित के पिताश्री ने पढ़ाई के साथ धार्मिक संस्कारों से जुड़े रहें इसलिए ग्रेजुएशन करने खुरई गुरुकुल में भेज दिया जहां से बीएस सी की लौकिक शिक्षा ग्रहण की और बड़े ही अच्छे से मित्र मंडली के मस्ती मजाक करते कॉलेज की पढ़ाई की। **-अभिषेक अशोक पाटील**

भावों की शुद्धता ही जैन धर्म की प्राप्ति है- संघ शिरोमणि : भावलिंगी संत विमर्शसागर जी मुनिराज

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। किसी ने पूछा गुरुदेव ! जैन धर्म को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? मैंने कहा- आप अपने भावों को जितना शुद्ध करते जायेंगे, आप उतने ही जैनधर्म को प्राप्त होते जायेंगे। आप मन से अच्छा, शुभ, शुद्ध विचार कीजिए आप मन से जैन धर्म के पालक कहलायेंगे। आप वचनों से शुभ वचन बोलिए आप वचन से जैन धर्म के पालन करने वाले। कहलायेंगे। आप अपने शरीर की चेष्टायें शुभ, शुद्ध रखिए आप काप से भी जिनधर्मी कहलायेंगे। जैन धर्म पालन की सरलतम विधि समझाते हुए परमपूज्य संघशिरोमणि भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ने गाजियाबाद-वसुन्धरा में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुये ऐसा मांगलिक प्रवचन दिया।

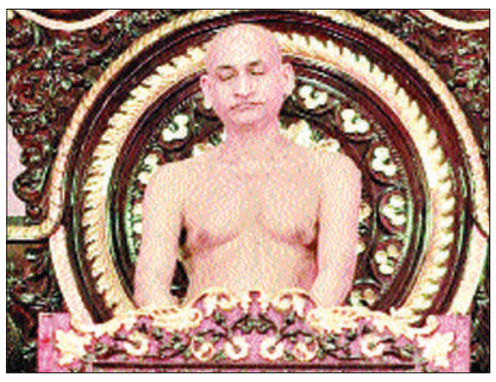

आचार्य श्री ने बतलाया इस संसार में जितने भी जीव हैं वे सभी भावों की मलिनता को लिए हुए रहते हैं। धर्म मात्र भाव परिवर्तन का नाम है, धर्म पालते हुए भी यदि भाव पवित्र, शुभ, शुद्ध नहीं हों तो मानना चाहिए कि अभी धर्म का पालन नहीं हो रहा है। हमारी हर किया, हमारा हर पुरुषार्थ अपने भावों को ही परिवर्तन करने का होना चाहिए तो निश्चित ही आप जैन धर्म को प्राप्त कर लेंगे।

वास्तव में जैन किसी सम्प्रदाय या व्यक्ति का नाम नहीं है। जैन जीव की उस भावदशा का नाम है जो भावदशा शुभ व शुद्ध है। जब अपने ही भाव आत्मस्वभाव की प्राप्ति के लिए गति करते हैं तब जानना चाहिए आत्मा की परमात्मा बनने की प्रोसेस (प्रक्रिया) प्रारंभ हो गयी है! 02 पास्वीसक आचार्य श्री संघ सहित वसुन्धरा-गाजियाबाद में विराजमान है।

रायपुर रेल मंडल के डीजल लोको शेड में रेल कर्मचारियों के लिए कर्मचारी शिकायत निवारण सह चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर रेल मंडल के डीजल लोको शेड में रेल कर्मचारियों के लिए कर्मचारी शिकायत निवारण सह चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन किया गया।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर मंडल प्रशासन द्वारा रेलवे कर्मचारियों के हितों, उन्हें स्वस्थ कार्यालयीन वातावरण प्रदान करने, उनकी शिकायतों एवं समस्याओं के निराकरण तथा उन्हें स्वास्थ्य लाभ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कर्मचारी शिकायत निवारण एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन समय ङ्कसमय पर किया जाता है।

इसी संदर्भ में मंडल रेल प्रबंधक श्री दयानंद के मार्गदर्शन में 28 जनवरी 2025 को मंडल के डीजल लोको शेड में कर्मचारी शिकायत निवारण एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री राहुल गर्ग के एवं वरिष्ठ वित्त प्रबंधक श्री शिवाशीष के नेतृत्व में आयोजित शिकायत निवारण शिविर में 11 कर्मचारियों द्वारा लिखित शिकायतें दर्ज कराई गई तथा मौखिक रूप से 23 शिकायते दर्ज कराई गई। मौखिक शिकायतों पर गहन विचार विमर्श किया गया तथा कुछ शिकायतों का तत्काल निराकरण किया गया। साथ ही बाकी शिकायतों का निराकरण रेलवे बोर्ड के गाइड लाइन के तहत अतिशीघ्र करने का आश्वासन दिया गया।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में डीजल लोको शेड के 153 कर्मचारियों एवं उनके परिजनों ने अपने स्वास्थ्य का परीक्षण कराया। डिविजन रेलवे हास्पिटल, रायपुर के डाक्टरों की टीम द्वारा विभिन्न बीमारियों के लक्षण, प्रकार, इससे होने वाली हानि तथा परहेज करने के अलावा अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धित जानकारियां भी दी गई। इस शिविर में अपर मंडल चिकित्सा अधिकारी डॉ. सागर अवचर, सहायक कार्मिक अधिकारी इंद्रजीत कुमार सिंह, सहायक मंडल वित्त प्रबंधक श्रीमती सुमित्रा पाल तथा कार्मिक एवं चिकित्सा विभाग के निरीक्षकों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की।

भाजपा-कांग्रेस के बीच पोस्टर वार, दोनों दल एक-दूसरे पर साध रहे निशाना

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में चुनावी माहौल गर्मा गया है और इस बीच भाजपा और कांग्रेस के बीच पोस्टर वार जारी है। दोनों दल सोशल मीडिया पर पोस्ट वायरल करके एक-दूसरे पर हमलावर हो रहे हैं। भाजपा ने एक पोस्टर जारी किया है जिसमें कांग्रेस के नेताओं जैसे प्रमोद दुबे, किरणमयी नायक, एजाज ढेबर और उनके परिजनों की तस्वीरें हैं, और परिवारवाद के आरोप लगाए हैं। भाजपा ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस अपने कार्यकर्ताओं के साथ नाइंसाफी करती रही है और केवल परिवारवाद को बढ़ावा देती है।

वहीं, कांग्रेस ने भी भाजपा के खिलाफ पोस्टर जारी किया है, जिसमें भाजपा के 20 में से 18 वादों को अधूरा बताते हुए वादाखिलाफी का आरोप लगाया है। कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने भाजपा पर तीखा हमला करते हुए कहा कि चिरमिरी में भाजपा ने महापौर का टिकट जिसे बेचा है, वह पिछले चुनाव में पार्टी के खिलाफ लड़ा था और सिर्फ 4 वोट ही प्राप्त कर पाया था। इसके अलावा, भाजपा के कार्यकर्ताओं की व्यथा भी पार्टी नेतृत्व तक पहुंच चुकी है, और वे आगामी चुनावों में इसका बदला लेंगे। परिवारवाद के मुद्दे पर भाजपा ने भी कांग्रेस नेताओं पर निशाना साधा है। स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल ने कहा कि कांग्रेस में केवल परिवारवाद ही चल रहा है, और उन्होंने कई उदाहरण दिए, जैसे रायपुर में प्रमोद दुबे और उनकी पत्नी दीप्ति दुबे, चिरमिरी में विनय जायसवाल और उनकी पत्नी कंचन जायसवाल, और बिलासपुर में किरणमयी नायक और उनके देवर प्रमोद नायक। चुनावी माहौल में दोनों दलों के बीच की यह जुबानी जंग अब और भी तेज होती जा रही है, और आगामी चुनावों में यह मुद्दा बड़ा बन सकता है।

जीवन अपने लिए नहीं, अपनों के लिए : किरवई

महाराष्ट्र मंडल के विशेष कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने की अध्यक्ष काले को शासन में शामिल करने की मांग

रायपुर (विश्व परिवार)। हमारा जीवन अपने नहीं बल्कि अपनों के लिए है। अपने लोग, अपना शहर, अपनी प्रकृति, अपने जीव- जंतु... इन्हीं के लिए तो है हमारा जीवन। इस आशय के विचार महाराष्ट्र मंडल के एक विशेष कार्यक्रम में भारतीय मजदूर संघ के संगठन मंत्री (छत्तीसगढ- मध्य प्रदेश) सुनील किरवई ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वे इस बात से सहमत नहीं कि हमारा जीवन दूसरों के लिए है। दूसरों की सेवा कोई नहीं करता और कोई करेगा भी नहीं। किरवई ने कहा कि भारत की आरोग जीवी संस्कृति व सभ्यतता के मान बिंदुओं का रक्षण करते हुए महाराष्ट्र मंडल रायपुर अब अपने 90 वर्ष पूरे करने जा रहा है। इसी महाराष्ट्र मंडल में पिछले 14 वर्षों से अजय काले निर्विरोध

अध्यक्ष हैं और महाराष्ट्र मंडल का उत्तरोत्तर विकास कर रहे हैं। यहीं नहीं किशोरावस्था से ही काले युवा संघ चलाते थे। ऐसे उत्साही दूरदृष्टि वाला समाजसेवी हमारे बीच सतत सक्रिय है, तो मुख्यमंत्री साय को उनका उपयोग अपने शासन में भी करना चाहिए।

इंदिरा यूथ यात्रा और लीडरशिप अवॉर्ड्स : युवाओं के सशक्तिकरण और नेतृत्व का जश्न

इंदिरा यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में राजपाल यादव ने साझा की अपनी कहानी और युवाओं को किया प्रेरित

रायपुर (विश्व परिवार)। इंदिरा यूनिवर्सिटी के राजधानी रायपुर में आयोजित इंदिरा यूथ यात्रा और लीडरशिप अवॉर्ड्स में युवाओं के सशक्तिकरण और नेतृत्व के क्षेत्र में एक नई दिशा दिखाई। इस प्रेरणादायक शाम के मुख्य अतिथि के रूप में बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता और कॉमेडी किंग राजपाल यादव ने शिरकत की और अपने जीवन के संघर्षों और सफलता के अनुभवों को साझा किया।

राजपाल यादव ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि सफलता के लिए कोई शॉर्टकट नहीं होता। उन्होंने बताया कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों और संघर्षों को गले लगाना ही असल सफलता की ओर बढ़ने का रास्ता है। जो व्यक्ति बिना संघर्ष के सफलता की राह पर चलता है, वह केवल चमत्कारी परिणाम की उम्मीद करता है, लेकिन असल में सफलता वह है जो परिश्रम और कठिनाइयों से गुजरने के बाद प्राप्त होती है।

उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, बल्कि संस्कार भी देती है। शिक्षा के जरिए हम सिर्फ पढ़ाई नहीं करते, बल्कि अपने भीतर अनुशासन और ईमानदारी जैसी महत्वपूर्ण बातें भी सीखते हैं, जो हमें जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए सक्षम बनाती हैं।

राजपाल यादव ने अपनी सफलता के सफर का भी जिक्र किया, जिसमें उन्होंने कई संघर्षों का सामना किया, लेकिन कभी हार नहीं मानी। उन्होंने बताया कि मेरे पास शुरुआत में कोई बड़ा नाम नहीं था, लेकिन मैंने कभी यह नहीं सोचा कि मैं हार मानूंगा। मैंने छोटी-छोटी भूमिकाओं से शुरुआत की और जब मेहनत एवं लगन से काम किया और आज इस मुकाम पर हूं।

समाज और देश के लिए बड़े सपने देखने की प्रेरणा : राजपाल यादव ने युवाओं से यह भी कहा कि वे सिर्फ अपने करियर के बारे में नहीं सोचें, बल्कि समाज और देश के लिए कुछ बड़ा करने का सपना देखें। उन्होंने समाज में योगदान और नेतृत्व के महत्व पर जोर दिया और कहा कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसे साझा करना ही असली सफलता है। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथियों के रूप में डॉ. पंडित माली, सीईओ, इंदिरा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स, पुणे और रजी थॉमस, चीफ कॉर्पोरेट रिलेशन्स एंड आउटरीच ऑफिसर, इंदिरा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स, पुणे ने भी अपने विचार साझा किए।

लीडरशिप अवॉर्ड्स और प्रतिभागियों की भागीदारी : कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता दिखाने वाले व्यक्तियों को लीडरशिप अवॉर्ड्स से सम्मानित किया गया। इंदिरा यूथ यात्रा और लीडरशिप अवॉर्ड्स में 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें छात्र, प्रोफेशनल्स और शिक्षक शामिल थे। सम्मानित होने वाले में इंदिरा के पुणे इंस्टिट्यूट के एमबीए के सैकंड बैच का स्टूडेंट और वर्तमान में कांकेर कलेक्टर निलेश क्षीरसागर प्रमुख थे। इस आयोजन ने इंदिरा यूनिवर्सिटी की प्रतिबद्धता को फिर से उजागर किया कि वह भविष्य के नेताओं को तैयार करने के लिए विश्वस्तरीय शिक्षा और पहल प्रदान करने में समर्पित है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शनिवार 01 फरवरी 2025

संक्षिप्त समाचार

चोरी करने से मना किया तो मार दिया चाकू,दो गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। लोक प्रयाग महोत्सव सेल में चोरी करने से मना करने पर चाकू से हमला करने वाले दो आरोपियों को कोतवाली पुलिस ने किया गिरफ्तार कर लिया है तथा आरोपियों के विरुद्ध थाना सिटी कोतवाली में धारा 307,296,115(2), 351 (3).3. (5), बीएनएस. एवं धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही की है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी सनबीर पाल पिता रामबाबू पाल उम्र 27 वर्ष सा0 रामनगर कालोनी पुरदिल नगर थाना सिंकदर राउं जिला हाथरस उत्तरप्रदेश द्वारा दिनांक 29.01.25 को शाम 6:00 बजे करीब लोक प्रयाग महोत्सव सेल में अपने लगाये प्रदर्शनी में देखरेख कर रहा था किचन वियर स्टॉल के पास था कि उसी समय दो लडके जो एक दूसरे का नाम देव यादव और धरमू यादव ले रहे थे जो किचन वियर स्टॉल में रखे सामान को चुपके से चोरी कर अपने अपने जेब में रख रहे थे जिसे देखकर चोरी करने से मना किया तो दोनो चोरी कर रखे सामान को वापस चिकन वियर स्टॉल में फेंक कर दोनो एक राय होकर प्रार्थी को मां बहन की अश्लील गाली गलौज करते हुये जान से मारने की धमकी देकर अपने-अपने पास में रखे बडे चाकूओं से मारने से प्रार्थी को बायी छोटी उंगली एवं बायें जांघ के पास चोट आकर खुन निकलने की प्रार्थी के रिपोर्ट पर तत्काल अपराध दर्ज किया गया। विवेचना के दौरान घटना स्थल निरीक्षण एवं गवाहों के कथन के आधार पर आरोपीगणों का पता तलाश दौरान मिलने पर कड़ाई से पूछताछ करने पर जुर्म स्वीकार कर घटना में प्रयुक्त धारदार चाकू को लाकर पेश करने पर गवाहों के समक्ष जप्त किया गया,आरोपियों के विरुद्ध थाना सिटी कोतवाली धमतरी में धारा 307,296,115(2), 351 (3).3. (5), बीएनएस. एवं धारा 25,27 आर्म्स एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर दोनों को विधिवत गिरप्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

बेटी के उपचार के लिए रखे पैसे चुरा ले गया चोर

रामानुजगंज(विश्व परिवार)। रामानुजगंज नगर के वार्ड क्रमांक 3 में एकलव्य स्कूल के समीप एसआरएलएम सेंटर काम करने वाली महिला के घर घूसकर बीती रात्रि चोरों ने 15 हजार रुपए नगद मोबाइल एवं मंगलसूत्र चोरी कर लिया। घटना की सूचना सुबह रामानुजगंज थाने में दी गई सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच कर रही है।। मिली जानकारी के अनुसार एसआरएलएम सेंटर काम करने वाली महिला रीना नागवंशी बुधवार रात अपने घर में अपनी बेटी के साथ सोई हुई थी। इसी दौरान मध्य रात्रि घर के बालकनी से चोर कमरे में घुस गया। और चार्ज में लगा मोबाइ, बैग में रखें 15 हजार रूपये तथा महिला का मंगलसूत्र की चोरी कर ली। इस दौरान महिला की बेटी उठ गई इसके बाद वह अपनी मां को उठाने लगी तो शोरगुल की आवाज सुनकर चोर मौके से भाग गया। सुबह इसकी सूचना रामानुजगंज थाने में दी गई। बताया जाता है कि महिला रीना अत्यंत गरीब परिवार से है तथा एकलव्य स्कूल के समीप एसआरएलएम सेंटर में काम करके अपना जीवन यापन करती है। हाल ही में उसने ने अपनी बेटी पिंकी नागवंशी जिसकी शादी बलरामपुर में हुई है उसे बलरामपुर से इलाज के लिए उसने रामानुजगंज बुलाया था एवं उसके ईलाज के लिए 15000 रूपये बैंक से निकालकर लाये थे जिसे चोर ले गया।

यातायात पुलिस ने छात्र छात्राओं को दी यातायात नियमों की जानकारी

धमतरी(विश्व परिवार)। थाना केरेगांव पुलिस के द्वारा ग्राम कुकरेल के पंजाब नेशनल बैंक, ग्राम पंचायत भवन में आये ग्रामीणों को यातायात नियमों की जानकारी देकर यातायात नियमों का पालन करने की गई अपील यातायात जागरूकता रथ ग्राम मुजगहन, लोहरसी एवं खरतुली के गली, मोहल्लें में भ्रमण कर ग्रामीणजन को किया गया यातायात नियमों के प्रति जागरूक सड़क परिवहन राजमार्ग मंत्रालय नई दिल्ली के निर्देशानुसार 35 वॉ राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें पुलिस अधीक्षक श्रीमान आंजनेय वार्ष्णेय के निर्देशानुसार, उप पुलिस अधीक्षक सुश्री मोनिका मरावी के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा माह के तीसवें दिवस दिनांक 30.01.25 को यातायात पुलिस सउनि. सुरेश नेताम, चन्द्रशेखर देवांगन,आर.गणपत डिंडोलकर के द्वारा इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कुरूद में पहुंचकर उपस्थित छात्र-छात्राओं को यातायात कार्यशाला के माध्यम से दोपहिया वाहन मे दो से अधिक सवारी नही चलने, चालक व पीछे में सवार दोनो व्यक्ति को अनिवार्य रूप से हेलमेट पहनने, बिना लायसेंस के वाहन नही चलाने, तीव्र गति से वाहन चलाते हुए असुरक्षित ओव्हरटेक नही करने, मोबाईल फोन का प्रयोग करते वाहन चालन नही करने, सड़क में लगे सिग्नलों, संकेतात्मक, सूचनात्मक चिन्हों का पालन करने के संबंध में जानकारी देकर यातायात नियमों से संबधित पाम्पलेट वितरण किया गया।

पीठासीन अधिकारियों तथा मतदान अधिकारियों को दी गई प्रथम चरण का प्रशिक्षण

कलेक्टर ने प्रशिक्षण का निरीक्षण कर हरेक पहलुओं की जानकारी देने का दिया निर्देश

मतदान सम्बन्धी प्रत्येक बारीकियों का गम्भीरतापूर्वक प्रशिक्षण लेवें- कलेक्टर

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में त्रिस्तरीय पंचायत आम निर्वाचन 2025 के तहत पीठासीन अधिकारियों तथा मतदान अधिकारियों को प्रथम चरण का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसी क्रम में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मयंक चतुर्वेदी ने आज जिला मुख्यालय के आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल में आयोजित प्रशिक्षण का निरीक्षण करते हुए कहा कि मतदान प्रक्रिया को सफ्लतापूर्वक संपन्न कराने के लिए मतदान सम्बन्धी प्रत्येक बारीकियों की पूरी जानकारी होना जरूरी है। इस दिशा में मतदान दलों के अधिकारी-कर्मचारी मतदान प्रक्रिया के बारे में गम्भीरतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करें। इस प्रथम प्रशिक्षण में पावर पॉइंट के माध्यम से मतदान दलों के पीठासीन अधिकारियों सहित मतदान अधिकारी-एक को मास्टर्स ट्रेनर्स द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया सम्बन्धी प्रशिक्षण के साथ ही उनकी शंकाओं का समाधान किया गया। गौरतलब है कि त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन में मतपत्र एवं मत पेटी के द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न होगी। कलेक्टर ने मतदान दलों के अधिकारी-कर्मचारियों को आदर्श आचार संहिता का अनुपालन सुनिश्चित करने निर्देशित करते हुए कहा कि राज्य निर्वाचन आयोग के द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही आदर्श आचार संहिता प्रभावशील हो गई है। इस हेतु निष्पक्ष एवं पारदर्शिता के साथ निर्वाचन को सम्पन्न कराना हम सभी अधिकारी-कर्मचारियों की जिम्मेदारी है। इस दिशा में निर्वाचन प्रक्रिया पूर्ण होने तक आदर्श आचरण संहिता का पालन करें अन्यथा संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई होगी।

महाकुंभ जाने वाले वाहनों की एंट्री बैन

बलरामपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़- उत्तर प्रदेश बॉर्डर पर महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं को रोक दिया गया है। बुधवार शाम लगभग 12 घंटे तक ट्रकों और भारी वाहनों को बसंतपुर से धनवार के बीच रोका गया था। जिसके कारण 15 किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा। फ़िलहाल यातायात बहाल पर दी गई है। लेकिन महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं को रोक दिया गया है। दरअसल, प्रतिबन्ध का सबसे अधिक असर बलरामपुर जिले के धनवार बॉर्डर पर देखने को मिला। प्रयागराज में मची भगदड़ के बाद सीमावर्ती राज्यों की सीमाओं पर 31 जनवरी रात 12 बजे तक वाहनों की एंट्री पूरी तरह से बैन कर दी है है। इसके लिए सरगुजा आईजी ने कुंभ श्रद्धालुओं की गाड़ियों को रोकने का आदेश जारी किया है। जिसके बाद श्रद्धालुओं की गाड़ियों को सूरजपुर जिले के चंदौरा से वापस किया गया। कई घंटे जाम में फंसी रही गाडियां प्रतिबन्ध के बीच स्थानीय यात्री बसों और चार पहिया वाहनों को इससे छूट दी गई है। लेकिन कुंभ यात्रियों के वाहनों को रोका गया है। धनवार से लेकर बसंतपुर तक जाम की स्थिति बनने के कारण यूपी के रेनुकूट तक चलने वाली गाड़ियों को परिवर्तित मार्ग से रघुनाथपुर होकर भेजा गया। इस दौरान यूपी से गाड़ियों को आने की छूट है, लेकिन गाड़ियां यूपी सीमा और छत्तीसगढ़ सीमा में जाम में फंस गई थी। यह प्रतिबंध महाकुंभ में बढ़ती भीड़ और सुरक्षा कारणों को ध्यान में रखते हुए लगाया गया है। 1 फरवरी से वाहनों को प्रयागराज महाकुंभ जाने की अनुमति दी जाएगी। प्रशासन ने यात्रियों से धैर्य बनाए रखने और वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने की अपील की है।कई किलोमीटर तक जाम लगने के कारण यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ा।

आबकारी वृत्त बिलाईगढ़ ने 300 लीटर महुआ शराब और 3600 किलो लाहन जब्त किया

सारंगढ़ बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। आबकारी आयुक्त सह सचिव एवं जिले के प्रभारी सचिव आर संगीता के निर्देश के तारतम्य में कलेक्टर धर्मेश साहू एवं सहायक आयुक्त आबकारी सोनल नेताम के मार्गदर्शन में आगामी नगरीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के मद्देनजर अवैध शराब के विरुद्ध लगातार आबकारी विभाग की कार्यवाही जारी है। कलेक्टर के द्वारा निर्वाचन अवधि में अवैध मदिरा के आसवन धारण परिवहन एवं विक्रय करने वालों को चिन्हित कर उन पर कठोर एवं प्रभावी नियंत्रण हेतु आदेशित किया गया है इसके परिपालन में आबकारी विभाग द्वारा अवैध कच्ची महुआ शराब के विक्रय एवं आसवन के विरुद्ध कार्यवाही की गई। आबकारी विभाग वृत्त प्रभारी बिलाईगढ़ सरसिवा को सूचना मिली की ग्राम चारपाली खपरखोल के जंगल पहाड़ी क्षेत्र में आगामी पंचायत चुनाव हेतु भारी मात्रा में अवैध कच्ची महुआ शराब का आसवन करने एवम यहां से मदिरा को आसपास के गावो में भी विक्रय तथा परिवहन करने की सूचना प्राप्त हुई। सूचना की पुष्टि होने पर आबकारी टीम के साथ ग्राम चारपाली खपरखोल के पास स्थित जंगल पहुंचे वहा पर गांव के बाहर नाले के किनारे लगभग 05 से 06 किलोमीटर दूर चलने के पश्चात जंगल में महुआ शराब बनाने के ठिकाने को खोजा गया। इस तरह के कुल 04 ठिकानों पर टीम के साथ पहुंचकर कार्यवाही की गई इन शराब बनाने के ठिकानों में 03 चढ़ी हुई शराब भट्टी तथा मदिरा बनाने हेतु समान ,बर्तन आदि मिले इन जगहों से 06 नग पालीथीन झिल्ली के अंदर भरा 50-50 लीटर कुल जब्त मात्रा 300 लीटर कच्ची महुआ शराब को जब्त किया गया। शराब निर्माण हेतु तैयार किया गया महुआ लाहन जो की सीमेंट बोरी के अंदर पालीथीन में भर कर रखा गया था के कुल 120 नग प्रत्येक में भरा 30-30 किलोग्राम कुल मात्रा 3600 किलोग्राम को जब्त किया गया। कच्ची महुआ शराब को कब्जा आबकारी लिया गया एवम विधिवत रूप से महुआ लाहन का नष्टीकरण किया गया है। अज्ञात आरोपी के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम धारा 34(1)(क) (च), 34(2) का , प्रकरण कायम कर विवेचना में लिया गया है। आरोपियों की पतासाजी की जा रही है। इस कार्यवाही में आबकारी उपनिरीक्षक विपिन पाठक, आबकारी मुख्य आरक्षक फागुलाल टंडन धनेश्वराव मगर सुरक्षा गार्ड लोचन साहू का योगदान रहा।

जिला पंचायत के सीईओ डॉ. संजय कन्नौज ने बालोद विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों का किया दौरा

बालोद(विश्व परिवार)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे ने बालोद विकासखण्ड के विभिन्न ग्रामों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान सीईओ डॉ. कन्नौजे ने ग्रामों में चल रहे निर्माणाधीन विकास कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने जिले के बालोद विकासखण्ड के ग्राम जगतरा के शासकीय प्राथमिक शाला का आकस्मिक निरीक्षण कर स्कूल में छात्र-छात्राओं से पढ़ाई के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने छात्र हिमांचल, जीविका एवं नेहूल से 12 एवं 13 का पहाड़ा भी पूछा। बच्चों द्वारा नि:संकोच पहाड़ा सुनाए जाने पर सीईओ डॉ. कन्नौजे प्रसन्नचित हुए। इस दौरान सीईओ ने बच्चों को पेड़ के महत्व की जानकारी दी तथा स्कूल परिसर में आम के पौधे का रोपण भी किया गया। सीईओ डॉ. कन्नौजे ने स्कूल के मध्यान्ह कक्ष में मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता का जायजा लिया। उन्होंने स्कूल परिसर स्थित पुष्प वाटिका में सेमी, गोभी, बैंगन एवं भिण्डी सब्जी के रोपे गए पौधे का अवलोकन भी किया। जिला पंचायत के सीईओ डॉ. कन्नौजे ने ग्राम जगतरा में कुंआ निर्माण कार्य का जायजा लिया। उल्लेखनीय है कि ग्राम पंचायत जगतरा में कुल 44 कुंआ निर्माण का कार्य स्वीकृत है। जिसमें से 34 कुआं निर्माण का कार्य पूर्ण किया जा चूका है। सीईओ ने ग्राम जगतरा में निर्माणाधीन आवास कार्यों का भी जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने आवास के हितग्राहियों से चर्चा करते हुए आवास निर्माण में आ रही समस्याओं के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने संबंधित जिला एंव जनपद अधिकारियों को आवास निर्माण में मटेरियल, राजमिस्त्री सहित अन्य समस्याओं के जल्द से जल्द निराकरण करने के निर्देश दिए। सीईओ ने ग्राम पंचायत उमरादाह के आश्रित ग्राम चरोटा में निर्मित स्टॉप डेम का भी निरीक्षण किया। इस दौरान सहायक परियोजना अधिकारी श्री ओपी साहू, जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, एसडीओ आरईएस सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

अवैध शराब बेचने ले जा रहा विक्रेता पकड़ाया

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले की थाना अर्जुनी पुलिस द्वारा अवैध शराब बेचने ले जा रहे एक व्यक्ति को पकड़कर उसके पास से 22 पौवा देशी प्लेन शराब जब्त किया है। मामले में आरोपी के विरुद्ध ,धारा 34 (1) आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की गई है। मिली जानकारी के अनुसार धमतरी पुलिस,थाना अर्जुनी द्वारा मुखबिर के बताए अनुसार ग्राम अर्जुनी बिजली ऑफिस के सामने बताए हुलिया के आधार पर एक मोटर सायकल को रोककर नाम पता पूछने पर अपना नाम गजाधर साहू पिता सरजू राम साहू उम्र 50 वर्ष साकीन कुरमातराई बताया और मोटर सायकल की जांच किये जाने पर एक थैले में रखे 22 पौवा देशी प्लेन शराब प्रत्येक में 180-180 एमएल.शराब भरी हुई किमत 1980 रुपये एवं प्रयुक्त मोटर सायकल जप्त कर आरोपी के विरुद्ध थाना अर्जुनी में धारा 34 (1) आबकारी एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही की गई।

टांगररास में बनेगा स्टॉप डैम, कलेक्टर ने किया स्थल निरीक्षण

सुकमा(विश्व परिवार)। छिंदगढ़ विकासखंड के ग्राम टांगररास में स्टॉप डैम के निर्माण की योजना को लेकर कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव ने बुधवार को स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान कार्यपालन अभियंता शांतनु सुकुमार सहित अन्य संबंधित निर्माण अधिकारी उपस्थित थे। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ध्रुव ने प्रस्तावित डैम निर्माण स्थल का बारीकी से जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को निर्माण कार्य में गुणवत्ता व समय-सीमा का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्टॉप डैम बनने से क्षेत्र में जल संरक्षण को

बढ़ावा मिलेगा, जिससे किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी और पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो सकेगा। इसके साथ ही भू-जल स्तर में भी सुधार होगा, जिससे आसपास के ग्रामीणों को लाभ मिलेगा। कलेक्टर ध्रुव ने ग्राम पाकेला में स्थित पुराने डैम का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों से डैम की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली। पाकेला में पुराने डैम के जीर्णोद्धार कार्य प्रस्तावित है, कलेक्टर ने तत्संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि डैम के सुदृढ़ीकरण से जल संचयन क्षमता में वृद्धि होगी और स्थानीय लोगों को इसका अधिक लाभ मिलेगा। स्टॉप डैम के निर्माण और डैम के जीर्णोद्धार से स्थानीय किसानों और ग्रामीणों को जल संकट से राहत मिलेगी। इससे खेती-किसानी को बढ़ावा मिलेगा और जल संरक्षण को लेकर सरकार की योजनाएं भी प्रभावी ढंग से लागू हो सकेंगी।

जिम में किया वर्क आउट, फुटबॉल को लगाई किक, लोगों को पिलाई खुद की बनाई चाय, गैदू का गजब अंदाज

रेखचंद जैन की किक से दूर तक उछली बॉल

कांग्रेस प्रत्याशी मलकीत सिंह के दिखे कई अवतार

जगदलपुर(विश्व परिवार)। सिख यानि सरदारों का देश की आजादी और धर्म की रक्षा में सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सरदार तो पैदायशी हट्टे कट्टे होते हैं, कसरत भी जमकर करते हैं खेलों में भी माहिर होते हैं। नगर का सरदार बनने की जंग में दांव आजमा रहे महापौर पद के कांग्रेस प्रत्याशी सरदार मलकीत सिंह गैदू आज कई अवतारों में नजर आए। मलकीत सिंह गैदू गुरुवार को सुबह सुबह पूर्व विधायक एवं संसदीय सचिव रेखचंद जैन के साथ स्कूटी पर सवार होकर निकल पड़े थे शहर की सड़कों पर। दो बड़े कांग्रेस नेताओं की स्कूटी की सवारी तो आकर्षण का केंद्र रही ही, इसके बाद दोनों ने जो कुछ किया वह और भी आकर्षक रहा। आज सुबह कांग्रेस के महापौर प्रत्याशी मलकित सिंह गैदू और पूर्व विधायक रेखचंद जैन ने शहर के शहीद पार्क, इंदिरा स्टेडियम, लालबाग मैदान, पुराना बस स्टैंड, दलपत सागर मे आम नागरिकों, खिलाड़ियों से मुलाक़ात कर आशीर्वाद मांगा, कांग्रेस को प्रचंड बहुमत से विजयी बनाने की अपील की। उनके साथ अतिरिक्त शुक्ला, रोजविन दास, महेंद्र महापात्र भी मौजूद रहे। सभी स्कूटर पर सवार होकर चल रहे थे। इस बीच वे एक चाय वाले की गुमटी में जा पहुंचे। एक चाय वाले की कामयाबी तो पूरी दुनिया देख रही है, सो सरदार मलकीत सिंह भी कुछ देर के लिए ही सही चाय वाले की भूमिका में आ गए। उन्होंने गुमटी में चाय बनाई और लोगों को पिलाई। इसके बाद मलकीत सिंह और रेखचंद जैन जा पहुंचे जिम में। वहां उन्होंने वर्क आउट कर अपनी भुजाओं और जंघा की ताकत दिखाई। जिम में पहुंचे युवाओं से चुनाव में वोट का सहयोग मांगा और उन्हें भरोसा दिलाया कि मेयर बनने के बाद हर वर्ग के लोगों का ध्यान रखते हुए काम करेंगे। इसके बाद श्री गैदू और श्री जैन अपनी टीम के साथ स्टेडियम में जा धमके, जहां दोनों नेताओं ने फुटबॉल पर अपना जौहर दिखाया।

12 साल की छात्रा से दरिंदगी..दो छात्रों ने कई बार किया दुष्कर्म

बलरामपुर(विश्व परिवार)। जिले के कुसमी ब्लॉक के एक निजी छात्रावास में रहकर छठवीं कक्षा में पढ़ाई करने वाली छात्रा गर्भवती हो गई है। छात्रा 12 साल की है। स्वास्थ्य खराब होने पर जांच में छात्रा के गर्भवती होने का पता चला। दो छात्रों पर छात्रा ने सामूहिक दुष्कर्म का आरोप लगाया है। एक छात्र उसी छात्रावास में रहकर पढ़ाई करता है, जबकि दूसरा छात्र छात्रावासी नहीं हैं। ये दोनों भी नाबालिग हैं। इनके खिलाफ मामला कर लिया गया है। छात्रा कुछ माह की गर्भवती मामला बलरामपुर जिले के दूरस्थ कोरन्धा थाना क्षेत्र का है। यहां एक गांव में निजी स्कूल है, जिसमें छात्रावास की सुविधा भी है। छात्र और छात्राओं के लिए छात्रावास में अलग-अलग कमरे हैं। इसी निजी स्कूल में छठवीं में छात्रा पढ़ाई करती है। दीपावली के अवकाश में छात्रा घर गई थी। उस दौरान उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था। घरवालों ने उसका इलाज कराया था। छात्रा के स्वस्थ होने पर फिर से निजी स्कूल में पढ़ाई करने के लिए भेज दिया था। छात्रा फिर से स्कूल के छात्रावास में रहकर पढ़ाई करने लगी थी। छात्रा की तबीयत फिर बिगड़ी तो डॉक्टर से जांच कराई। जांच में छात्रा के गर्भवती होने का पता चला। परिजन ने छात्रा से पूछताछ की। छात्रा ने दुष्कर्म करने की जानकारी दी। इसी आधार पर परिजन ने कोरन्धा थाने में घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई है। थाना प्रभारी विरासत कुजूर ने बताया कि छात्रा से महिला पुलिस अधिकारियों ने घटना की जानकारी ली है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 01 फरवरी 2025

व्यापार समाचार

मारुति सुजुकी की बिक्री तीसरी तिमाही में 16 प्रतिशत बढ़ी

नई दिल्ली(एजेंसी)। देश की बड़ी कार मैन्युफैक्चरिंग कंपनी मारुति सुजुकी ने बुधवार को वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही के नतीजे पेश किए। अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में कंपनी का मुनाफा सालाना आधार पर 16 प्रतिशत बढ़कर 3,727 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 3,206.8 करोड़ रुपये था। अधिक बिक्री के कारण कंपनी की ऑपरेशंस से आय सालाना आधार पर 15.7 प्रतिशत बढ़कर 38,764.3 करोड़ रुपये हो गई है। यह आंकड़ा पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 33,512.8 करोड़ रुपये था। दिसंबर तिमाही में कंपनी का खर्च सालाना आधार पर 16 प्रतिशत बढ़कर 35,163 करोड़ रुपये हो गया है। स्टैंडअलोन आधार पर कंपनी का शुद्ध लाभ पिछले वर्ष की समान तिमाही के आंकड़े 3,130 करोड़ रुपये से 13 प्रतिशत बढ़कर 3,525 करोड़ रुपये हो गया। वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही में कंपनी का एबिटा सालाना आधार पर 14.4 प्रतिशत बढ़कर 4,470.3 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 3,907.9 करोड़ रुपये था। कंपनी का एबिटा मार्जिन 11.6 प्रतिशत पर करीब सपाट रहा है। कंपनी ने कहा कि तिमाही के दौरान उसने 36,802 करोड़ रुपये की अब तक की सर्वाधिक शुद्ध बिक्री दर्ज की, जो पिछले वर्ष की समान तिमाही के आंकड़े 31,860 करोड़ रुपये से अधिक है। मारुति सुजुकी ने नियामकीय फाइलिंग में कहा कि दिसंबर तिमाही में कंपनी ने 5,66,213 वाहन बेचे, जबकि पिछले साल इसी तिमाही में 5,01,207 वाहन बेचे थे। मारुति सुजुकी ने तीसरी तिमाही में घरेलू बाजार में 4,66,993 वाहन बेचे, जबकि पिछले साल इसी तिमाही में 4,29,422 वाहन बेचे थे। इस दौरान कंपनी ने 99,220 वाहनों का निर्यात भी किया, जो किसी भी तिमाही में अब तक का सबसे अधिक निर्यात है। पिछले साल इसी अवधि में कंपनी ने 71,785 वाहनों का निर्यात किया था।

भारतीय शेयर बाजार सपाट खुला मिडकैप और स्मॉलकैप में तेजी

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार गुरुवार के कारोबारी सत्र में सपाट खुला। बाजार के मुख्य सूचकांकों में मिलाजुला कारोबार हो रहा है। सुबह 9:26 पर सेंसेक्स 5 अंक की मामूली गिरावट के साथ 76,537 और निफ्टी 20 अंक की तेजी के साथ 23,183 पर था। लार्जकैप की अपेक्षा मिडकैप और स्मॉलकैप में तेजी देखी जा रही है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 120 अंक या 0.23 प्रतिशत की तेजी के साथ 52,838 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 36.20 अंक या 0.22 प्रतिशत की बढ़त के साथ 16,576 पर था। ऑटो, आईटी और प्राइवेट बैंक इंडेक्स पर दबाव देखा जा रहा है। पीएसयू बैंक, फाइनेंशियल सर्विसेज, फार्मा, एफएमसीजी, मेटल, रियल्टी, मीडिया और एनर्जी इंडेक्स में तेजी बनी हुई है। सेंसेक्स पैक में बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, इंडसइंड बैंक, पावर ग्रिड, भारती एयरटेल, एनटीपीसी, कोटक महिंद्रा बैंक, मारुति सुजुकी, नेस्ले, एमएंडएम, टेक महिंद्रा, एलएंडटी, टाटा स्टील, एचसीएल टेक, एचडीएफसी बैंक और सनफार्मा टॉप गेनर्स थे। वहीं, टाटा मोटर्स, जोमैटो, एक्सिस बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, टाइटन, एसबीआई, इन्फोसिस, अल्ट्राटेक सीमेंट और रिलायंस इंडस्ट्रीज टॉप लूजर्स थे। चॉइस ब्रोकिंग का कहना है कि सपाट शुरुआत के बाद निफ्टी के लिए 23,050, फिर 22,950 और 22,800 एक अहम सपोर्ट होगा। वहीं, 23,250 एक अहम रुकावट का स्तर है। अगर यह ब्रेक होता है तो 23,400 और फिर 23,500 के भी स्तर देखने को मिल सकते हैं। एशियाई बाजारों में मिलाजुला कारोबार हो रहा है। टोक्यो का बाजार हरे निशान में है। वहीं, बैंकॉक और जकार्ता के बाजारों में लाल निशान में कारोबार हो रहा है। बुधवार को अमेरिकी फेड रिजर्व के ब्याज दरों को स्थिर रखने के फैसले के बाद वहां के बाजारों में आधा प्रतिशत तक की गिरावट देखने को मिली। कच्चे तेल भी सपाट बना हुआ है। डब्ल्यूटीआई क्रूड 72.62 डॉलर प्रति बैरल और ब्रेंट क्रूड 75.52 डॉलर प्रति बैरल पर है। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने बुधवार को 2,586 करोड़ रुपये की इक्विटी बेची थी। घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 1,792 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे थे।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह : होंडा मोटरसाइकल ने बच्चोंर को जागरूक करने के लिये सड़क सुरक्षा पर शिक्षा दी

रायपुर: होंडा मोटरसाइकल एंड स्कूचटर इंडिया (एचएमएसआई) ने सड़क के माहौल को ज्याकदा सुरक्षित बनाने के लिये अपनी प्रतिबद्धता जारी रखी है। इस कड़ी में कंपनी ने सड़क सुरक्षा की शिक्षा पर केन्द्रित एक रोचक ''किड्स कार्निवल'' का आयोजन किया। यह कार्यक्रम बच्चोंष को यातायात सुरक्षा की आवश्यएक जानकारी देने के लिए किया गया था। यह 2050 तक यातायात दुर्घटनाओं से होने वाली मौतों को शून्य करने के लिये होंडा के वैश्विक दृष्टिकोण से बखूबी मेल खाता है। एचएमएसआई ने सड़क सुरक्षा पर जागरूकता को बढ़ावा देने के लिये उल्लेखनीय कदम उठाये हैं। कंपनी ने यह काम 2030 तक सड़क पर होने वाली मौतों को आधा करने के लिये भारत सरकार के लक्ष्यक की दिशा में किया है। किड्स कार्निवल का आयोजन भारत में एचएमएसआई के सभी चार संयंत्रों में हुआ- तापुकारा (राजस्था न), विठलापुर (गुजरात), नारसापुरा (कर्नाटक) और आईएमटी मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा में कंपनी की ग्लोाबल रिसोर्स फैक्ट्री में इसका समापन हुआ। इसमें बच्चों के लिये संवादपरक एवं मजेदार गतिविधियाँ आयोजित की गई थीं, जो उन्हें सड़क सुरक्षा के महत्व पर शिक्षित करने के लिये थीं। यातायात के नियमों और सड़क के संकेतों से लेकर सड़कों पर जिम्मेहदारी से व्यहवहार करने के महत्वन तक, बच्चोंो को बड़े दिलचस्पक तरीके से यह अनिवार्य सबक सिखाये गये। किड्स कार्निवल गतिविधि में सरकारी तथा प्राथमिक स्कू लों के 1100 से अधिक विद्यार्थी एवं शिक्षक शामिल हुए। इसका लक्ष्य बच्चों के बीच सड़क पर सुरक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देना था। कक्षा 5 और 6 के विद्यार्थियों के साथ उनके शिक्षक थे। उन्होंरने संवादपरक गतिविधियों में सक्रियता से भाग लिया। यह गतिविधियाँ उन्हें शिक्षित करने और सड़क सुरक्षा का एंबेसेडर बनने की ताकत देने के लिये थीं।

विराट कोहली को देखने अरुण जेटली स्टेडियम में भारी भीड़

नईदिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली 13 साल बाद रणजी ट्रॉफी मैच खेल रहे हैं. वे अपनी घरेलू टीम दिल्ली की तरफ से खेल रहे हैं. दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में ये मैच दिल्ली और रेलवे के बीच होने वाला है. विराट कोहली की मौजूदगी ने इस मैच के प्रति फैंस की रुचि बढ़ा दी है और इसका असर स्टेडियम में देखने को मिल रहा है. फैंस बड़ी संख्या में उपस्थित हैं. विराट कोहली भारतीय क्रिकेट का सबसे बड़ा ब्रांड हैं. उनकी जबरदस्त फैन फॉलोइंग है. दिल्ली एवं जिला क्रिकेट बोर्ड इस सच्चाई को बखूबी जानता है और इसी वजह से दिल्ली और रेलवे के बीच होने वाले मैच को टिकट फ्री कर दिया गया है. इसका असर स्टेडियम में दिख रहा है. गुरुवार कार्यदिवस होता है, रणजी ट्रॉफी का मैच देखने अमूमन लोग बड़ी संख्या में नहीं आते, लेकिन विराट की मौजूदगी ने सबकुछ पीछे छोड़ दिया और फैंस बड़ी संख्या में उपस्थित हैं. विराट कोहली का जो भी फैन है वो आईपीएल की आरसीबी का भी फैन है. आरसीबी की लोकप्रियता का कारण विराट की लोकप्रियता है. रणजी ट्रॉफी का मैच देखने पहुंचे फैंस विराट के नाम के नारे तो लगा ही रहे थे आरसीबी के नारे भी जमकर लगे. विराट फैंस काफी जोश में नजर आए. उन्हें इंतजार था बस विराट को एक नजर देखने का और फिर मैच में विराट द्वारा एक बेहतरीन पारी का. विराट कोहली की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि दिल्ली और रेलवे के बीच होने वाले इस मैच को स्पोर्ट्स 18 और जियो सिनेमा पर लाइव प्रसारित किया जा रहा है. बता दें कि विराट कोहली 13 साल बाद रणजी ट्रॉफी का मैच खेल रहे हैं. आखिरी बार 2012 में उन्होंने रणजी मैच खेला था. ये मैच उन्होने उत्तरप्रदेश के खिलाफ खेला था जो गाजियाबाद में खेला गया था.

शार्दुल ठाकुर रणजी ट्रॉफी इतिहास में हैट्रिक लेने वाले मुंबई के पांचवें गेंदबाज बने

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय तेज गेंदबाज शार्दुल ठाकुर ने गुरुवार को शरद पवार क्रिकेट अकादमी में खेले गए रणजी ट्रॉफी मैच में मेघालय के खिलाफ मुंबई के लिए हैट्रिक बनाई। मेघालय के खिलाफ पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लेने के बाद मुंबई के लिए गेंदबाजी की शुरुआत करते हुए ठाकुर ने तीसरे ओवर में अनिरुद्ध बी, सुमित कुमार और जसकीरत को आउट किया तथा पारी की चौथी गेंद पर निशांत चक्रवर्ती को आउट किया। शार्दुल ठाकुर इस सीजन में दूसरे गेंदबाज बने हैं जिन्होंने हैट्रिक ली है। इससे पहले इस सीजन में पुदुचेरी के खिलाफ हिमाचल प्रदेश के ऋषि धवन ने हैट्रिक ली थी। इसके अलावा, 33 वर्षीय ठाकुर रणजी ट्रॉफी इतिहास में हैट्रिक लेने वाले मुंबई के पांचवें गेंदबाज बन गए। उनसे पहले मुंबई के लिए जहांगीर बेहरामजी खोत ने बड़ौदा के खिलाफ (1943/44), उमेश नारायण कुलकर्णी ने गुजरात के खिलाफ (1963/64), अब्दुल मूसाभाई इस्माइल ने सौराष्ट्र के खिलाफ (1973/74) और रॉयस्टन हेरोल्ड डायस ने बिहार (2023/24 सीजन) के खिलाफ हैट्रिक ली थी। इस सत्र में अब तक सात मैचों में ठाकुर ने एक शतक और दो अर्धशतक के साथ 20 विकेट और 297 रन बनाए हैं। ठाकुर के 4-14 के अलावा, मोहित अवस्थी ने दो विकेट लिए, जिससे मुंबई ने मेघालय को 12 ओवर में 29-6 के स्कोर पर रोक दिया।

स्मिथ 40 की उम्र तक खेल सकते हैं

नई दिल्ली(एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के महान क्रिकेटर इयान हीली का मानना है कि अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ की श्रीलंका के खिलाफ गाले में बल्लेबाजी देखने के बाद उन्हें लगता है कि स्मिथ 40 की उम्र तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेल सकते हैं। स्मिथ ने गाले में पहली पारी में 10,000 टेस्ट रन का मील का पत्थर हासिल किया, जहां उन्होंने 141 रन बनाकर इस प्रारूप में अपना 35वां शतक भी पूरा किया। मैं बहुत खुश था, उसने अपनी पीठ थपथपाई। मुझे लगा कि वह स्पष्ट सोच रखता है, और वह गेंद को खूबसूरती से टाइम कर रहा था, यहां तक कि अपने डिफेंस में भी। मैं कह रहा हूं कि वह अब 40 तक खेल सकता है। हीली ने एसईएनक्यू से कहा, उनके सामने बहुत कुछ है। 35 वर्षीय खिलाड़ी एलन बॉर्डर, स्टीव वॉ और रिकी पोंटिंग के साथ 10,000 टेस्ट रन बनाने वाले ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी बन गए हैं। दिलचस्प बात यह है कि तीनों ही टेस्ट टीम के कप्तान थे जब उन्होंने अपना 10,000वां रन बनाया था। अपनी 205वीं पारी में बाएं हाथ के स्पिनर प्रभात जयसूर्या की गेंद पर मिड-ऑन पर सिंगल लेकर 10,000 टेस्ट रन बनाने वाले पारी के हिसाब से पांचवें सबसे तेज बल्लेबाज बने। स्मिथ ने 55 से ज़्यादा की औसत से 10000 रन बनाए हैं, श्रीलंका के बल्लेबाज कुमार संगकारा 10,000 के आंकड़े को पार करने वाले एकमात्र बल्लेबाज़ हैं, जिनका औसत 57.40 है। सक्रिय खिलाड़ियों में सिर्फ़ जो रूट के 12,972 टेस्ट रन स्मिथ से ज़्यादा हैं। मैचों की बात करें तो सिर्फ़ ब्रायन लारा (111) ही स्मिथ के 115 से कम टेस्ट मैचों में इस मुकाम तक पहुंच पाए हैं। लारा, सचिन तेंदुलकर, कुमार संगकारा (सभी ने 195 पारियाँ लीं) और रिकी पोंटिंग (196) ही ऐसे बल्लेबाज़ हैं, जिन्होंने कम पारियों में यह मुकाम हासिल किया है। स्मिथ ने बुधवार को गाले में पहले दिन नाबाद 104 रन बनाए, यह उनका 35वां टेस्ट शतक था, जिससे ऑस्ट्रेलियाई टीम पहले टेस्ट में 330/2 का बड़ा स्कोर बनाने में सफल रही। दूसरे दिन उनकी 141

अदाणी पावर का मुनाफा तीसरी तिमाही में 7.4 प्रतिशत बढ़ा, आय में 11 प्रतिशत का इजाफा

अहमदाबाद(एजेंसी)। अदाणी पावर ने बुधवार को वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही के नतीजे जारी किए। कंपनी का मुनाफा अक्टूबर-दिसंबर अवधि में सालाना आधार पर 7.4 प्रतिशत बढ़कर 2,940 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि एक साल पहले की समान अवधि में 2,738 करोड़ रुपये था। अदाणी पावर ने स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा कि कंपनी का कंसोलिडेटेड मुनाफा चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में सालाना आधार पर 23 प्रतिशत बढ़कर 6,185 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि पिछले साल की समान अवधि में 5,009 करोड़ रुपये था। कंपनी की आय सालाना आधार पर 11 प्रतिशत बढ़कर

14,833 करोड़ रुपये हो गई है, जो कि वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में 13,355 करोड़ रुपये थी। आय बढ़ने की वजह अधिक वॉल्यूम होना है। अदाणी पावर के सीईओ एस.बी. ख्यालिया ने कहा, कंपनी 2030 तक 30 गीगावाट से अधिक की उत्पादन क्षमता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। उन्होंने आगे कहा, ऊर्जा की बढ़ती मांग के कारण भारतीय थर्मल पावर सेक्टर में पैदा हो रहे अवसरों का फायदा उठाने के लिए कंपनी तैयार है। दिसंबर तिमाही में कंपनी की कंसोलिडेटेड बिजली बिक्री 23.3 बिलियन यूनिट (बीयू) तक पहुंच गई है, जो कि वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के 21.5 बीयू से 8 प्रतिशत अधिक है। इस वित्त वर्ष के नौ महीनों (अप्रैल-दिसंबर) में कंपनी की बिजली बिक्री 69.5 बीयू रही, जो वित्त वर्ष 24 की इसी अवधि में 57.1 बीयू से 22 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने कहा, वित्त वर्ष 2025 के नौ महीनों के लिए कंसोलिडेटेड कंटिन्यूनिंग प्रॉफिट बिफोर टैक्स (पीबीटी) वित्त वर्ष 2024 की समान अवधि के आंकड़े 8,006 करोड़ रुपये की तुलना में 33 प्रतिशत बढ़कर 10,679 करोड़ रुपये हो गया है। ख्यालिया ने आगे कहा, हम अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता को बेहतर बनाने के लिए खनन में बैकवर्ड इंटीग्रेशन से लेकर अपने परिचालनों के डिजिटलीकरण तक के कदम उठा रहे हैं, जिससे हम भविष्य के लिए तैयार हो सकें।

उस्मान ख्वाजा ने जड़ा करियर का पहला दोहरा शतक

नईदिल्ली(एजेंसी)। श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया के बीच 2 टेस्ट मैचों की सीरीज का पहला मैच गाले में खेला जा रहा है. ये टेस्ट ऑस्ट्रेलिया के बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा के लिए काफी यादगार रहा है. लंब समय से खराब फॉर्म से गुजर रहे ख्वाजा ने न सिर्फ फॉर्म में वापसी करते हुए शतक लगाया है बल्कि अपने शतक को दोहरे शतक में बदला है. ये उनके करियर का पहला दोहरा शतक है. साथ ही वे श्रीलंका में दोहरा शतक लगाने वाले पहले ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज बन गए हैं. उस्मान ख्वाजा ने 2011 में इंग्लैंड के खिलाफ अपने टेस्ट करियर का आगाज किया था. पिछले 14 साल में उन्होंने अपने करियर में खेले 78 टेस्ट में 15 शतक लगाए थे. गाले टेस्ट उनके करियर का 79 वां टेस्ट है. उन्होंने 16 वां शतक जड़ा है और इस शतक को उन्होंने दोहरे शतक में बदल दिया है. ख्वाजा श्रीलंका में टेस्ट दोहरा शतक लगाने वाले पहले ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज हैं. दूसरे दिन लंच तक ख्वाजा 298 गेंद में 204 रन बनाकर नाबाद थे. इसमें 16 चौके और 1 छक्के शामिल हैं. ये टेस्ट स्टीव स्मिथ के लिए भी शानदार रहा है. इस टेस्ट में स्मिथ ने अपने करियर के 10,000 रन पूरे किए हैं. स्मिथ ने इस पारी में 35 वां शतक लगाया. वे दूसरे दिन लंच से पहले 251 गेंद पर 12 चौके और 2 छक्के लगाते हुए 141 रन बनाकर आउट हुए. ऑस्ट्रेलिया इस मैच में बड़े स्कोर की तरफ तेजी से बढ़ रही है. दूसरे दिन लंच तक ऑस्ट्रेलिया ने 3 विकेट के नुकसान पर 475 रन बनाए हैं.

JSW MG मोटर इंडिया ने 'प्रोजेक्ट रिवाइव' के तहत अपना चौथा पायलट प्रोजेक्ट किया लॉन्च

रायपुर : JSW MG मोटर इंडिया ने एप्सिलॉन ग्रुप की इकाई LICO मटेरियल्स के सहयोग से 'प्रोजेक्ट रिवाइव' के तहत बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (BESS) का अनावरण किया। इस उन्नत BESS में पुन: उपयोग की गई MG ZS EV बैटरियों का समावेश किया गया है, जो सर्कुलर EV अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए नवाचार अपनाने की कार निर्माता की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पारंपरिक समाधानों की तुलना में इस उत्पाद की आयु चार गुना अधिक है और यह परिचालन लागत को 60% तक कम कर सकता है। यह JSW MG मोटर इंडिया का 'प्रोजेक्ट रिवाइव' के तहत दूसरा जीवन बैटरी अनुप्रयोगों के लिए चौथा पायलट प्रोजेक्ट है। कंपनी समान उद्देश्यों वाली संस्थाओं के साथ सार्थक साझेदारियां कर रही है ताकि EV बैटरियों की प्राथमिक आयु के बाद की संभावनाओं का उपयोग किया जा सके। पिछली पहलों में किए गए महत्वपूर्ण नवाचारों के साथ, यह परियोजना JSW MG मोटर इंडिया द्वारा अब तक की सबसे उन्नत तैनाती को दर्शाती है। यह परियोजना स्थिरता पर केंद्रित है और भारत के लिए स्वच्छ ऊर्जा भविष्य को आकार देने में BESS तकनीक की क्षमता को उजागर करती है। BESS ग्रिड स्थिरता का समर्थन करता है, जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करता है और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को अधिकतम करता है। एप्सिलॉन ग्रुप की इकाई LICO मटेरियल्स, जो लिथियम-आयन बैटरियों के जीवन समाप्ति पर पुनर्चक्रण और पुनर्निर्माण में अग्रणी है, ने इस परियोजना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने तीन बहुपयोगी मॉडल विकसित किए हैं, जो उन्नत तकनीक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को जोड़ते हैं तथा आवासीय, वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्रों की विविध ऊर्जा भंडारण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। तीनों उत्पादों में 18kWh, 100kWh और 300kWh क्षमता के साथ विविध ऊर्जा भंडारण की सुविधा है, जो विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है। सभी मॉडलों में उन्नत सुरक्षा तंत्र शामिल हैं, जिनमें इमर्शन ऑयल कूलिंग और हीटिंग, बहु-स्तरीय सुरक्षा डिज़ाइन और स्मार्ट थर्मल प्रबंधन प्रणाली शामिल हैं।

जेएलएफ में नोबेल विजेता कैलाश सत्यार्थी की आत्मकथा 'दियासलाई' का लोकार्पण

जयपुर। लिटरेचर फेस्टिवल (जेएलएफ) के मंच पर आज नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी की आत्मकथा 'दियासलाई' का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक सत्यार्थी की जीवन यात्रा, उनके संघर्ष और दुनिया भर के बच्चों को शोषण से मुक्त करने की उनकी प्रेरक कहानी को दर्शाती है। लोकार्पण के दौरान कैलाश सत्यार्थी ने आत्मकथा के अध्यायों और उससे जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया। दियासलाई के 24 अध्यायों में कैलाश सत्यार्थी ने विदिशा के एक साधारण पुलिस कांस्टेबल के परिवार में जन्म से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान और नोबेल शांति पुरस्कार तक की अपनी यात्रा को लिखा है। सत्यार्थी की जीवनी किशोरावस्था में सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देने से लेकर बच्चों को शोषण मुक्त करने के संघर्ष की प्रेरक गाथा है। पुस्तक चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि एक बार कैसे तथाकथित अछूत महिला के हाथों से खाना खाने पर उन्हें उनके ही समाज ने बहिष्कृत कर दिया और उन्हें एक छोटे से कमरे में परिवार से अलग अकेले वक्त बिताना पड़ा। उस प्रकरण के बाद ही उन्होंने अपना जातीय उपनाम शर्मा हटाने का फैसला किया। ...और मैं सत्यार्थी बन

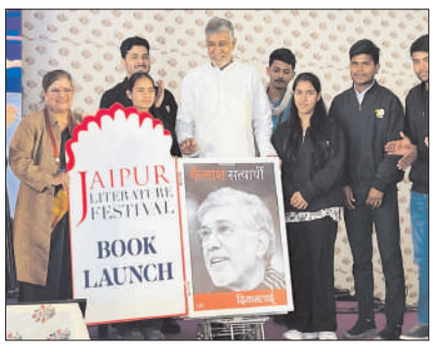

गया, जो सत्य का रक्षक है। उन्होंने बताया, नोबेल पुरस्कार मिलने पर कुछ वरिष्ठ पत्रकारों और यहां तक कि नोबेल समिति के सदस्यों ने मुझसे पूछा कि एक या दो वाक्यों में बताएं कि आपने अपने जीवन में क्या हासिल किया है? तो, मेरा जवाब बहुत सरल था कि मानवता के लिए मेरा सबसे विनम्र योगदान यह है कि मैं सबसे उपेक्षित और गुमनाम बच्चों को सामने लाने में सक्षम रहा। यही वजह है कि अब उन बच्चों की सुनवाई हो रही है। कोई भी सरकार उन्हें अनदेखा नहीं कर सकती, जो सदियों से गुमनाम रहे हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 01 फरवरी 2025

निकाय-पंचायत चुनाव : मतदान वाले दिन मिलेगी छुट्टी

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ सरकार ने चुनाव के बीच छुट्टी को लेकर एक आदेश जारी किया है। सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से जारी किए गए इस आदेश में मतदान की तारीखों पर सार्वजनिक अवकाश जारी किए जाने की बात लिखी है। आदेश के मुताबिक 11 फरवरी मंगलवार, 17 फरवरी सोमवार, 20 फरवरी गुरुवार को मतदान के दिन सार्वजनिक और सामान्य अवकाश रहेगा। इस आदेश में यह भी स्पष्ट किया गया है कि 23 फरवरी को भी मतदान होना है। हालांकि इस दिन रविवार है इसलिए अलग से सामान्य अवकाश की घोषणा नहीं की गई है।

संक्षिप्त समाचार

भाजपा प्रत्याशी राजेश गुप्ता का वार्ड भ्रमण जारी, जनता से मिल रहा भरपूर समर्थन

रायपुर (विश्व परिवार)। नगरीय निकाय चुनाव 2025 को लेकर छत्तीसगढ़ बीजेपी ने रायपुर नगर निगम के सभी 70 वार्डों के पार्षद

प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी है। भाजपा रायपुर जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर ने पार्टी प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव की सहमति से पार्षद प्रत्याशियों के नामों का एलान कर दिया है। जिसके बाद शंकर नगर वार्ड क्रमांक 30 में भाजपा प्रत्याशी राजेश गुप्ता द्वारा लोगो के बीच जाकर लगातार जनसम्पर्क कर रहे है। साथ ही उनके द्वारा लोगो को आश्वस्त भी किया जा रहा है, वार्डो में विकास की मायर बहेगी। शंकर नगर वार्ड क्रमांक 30 में भाजपा प्रत्याशी राजेश गुप्ता भाजपा के वरिष्ठ नेताओ में उनकी गिनती होती है। वार्ड की जनता का अपार समर्थन मिल रहा है। 10 नगर निगमों, 49 नगर परिषदों और 114 नगर पंचायतों सहित 173 नागरिक निकायों के चुनाव 11 फरवरी को एक ही चरण में होंगे, जबकि त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 17, 20 और 23 फरवरी को तीन चरणों में आयोजित किए जाएंगे।

निर्दलीय प्रत्याशी जितेंद्र अग्रवाल ने कहा- महिलाओ के सम्मान में सिलाई मशीन मैदान में

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में नगरी निकाय चुनाव का बिगुल बज चुका है। वार्ड क्रमांक 42 महंत लक्ष्मी नारायण दास वार्ड

के निर्दलीय प्रत्याशि जितेंद्र अग्रवाल लगतार जनसंपर्क कर रहे है। ज्ञात हो की निर्दलीय प्रत्याशि जितेंद्र अग्रवाल को सिलाई मशीन चिन्ह निर्वाचन आयोग द्वारा दिया गया है। चुनाव चिन्ह मिलने के बात जितेंद्र अग्रवाल ने कहा महिलाओ के सम्मान में सिलाई मशीन मैदान में, अपने कार्यकाल में वार्ड क्रमांक 42 महंत लक्ष्मी नारायण दास वार्ड के निर्दलीय प्रत्याशि जितेंद्र अग्रवालने महिलाओ को शशक्त बनाने तमान कार्य किए। साथ ही अपने वार्ड में अच्छी स्वास्थ व्यवस्था मोहिया कराने निरंतर कार्य किया जा रहा है। जनसम्पर्क के दौरान निर्दलय प्रत्याशी जितेंद्र अग्रवाल को जनता का भी भरपूर समर्थन मिल रहा है। ज्ञात हो की 2019 में निर्दलीय चुनाव जीतने के बाद अपना सफल कार्यकाल इनके द्वारा समाप्त किया गया है। दैनिक विश्व परिवार समाचार पत्र से खास चर्चा करते वक्त निर्दलीय चुनावी मैदान में खड़े जितेंद्र अग्रवाल ने कहा कि 2 साल कोरोना में चले गए जिसमें उन्होंने जनता के लिए तमाम कार्यों को किया कामों का विवरण देते हुए उन्होंने कहा कि सैनिटाइजेशन मशीन हो, वार्ड की गलियों को साफ सुथरा रखना हो या दवाइयां की व्यवस्था हो सब कार्य उनके द्वारा कोरोना काल में किया।

कांग्रेस छोड़ निर्दलीय मैदान में उतरे बंटी होरा, कहा- जनता की सेवा पहली प्राथमिकता

रायपुर (विश्व परिवार)। नगरीय निकाय चुनाव 2025 को लेकर छत्तीसगढ़ की राजनैतिक गलियारों में हल चल तेज़ हो गई है। प्रदेश की प्रमुख राजनैतिक पार्टी कांग्रेस के बागी नेता भी निर्दलीय चुनाव लड़ रहे है। इसके अलावा एक दर्जन से ज्यादा कांग्रेस नेताओं ने भी पार्टी से नाराज होकर निर्दलीय नामांकन दाखिल कर दिया है। कांग्रेस के बागी नेताओ में से एक हरदीप सिंह बंटी होरा भी है। 'दैनिक विश्व परिवार' से खास चर्चा करते वक्त उन्होंने बताया कि उनकी वार्ड का अपार समर्थन मिल रहा है। चुनाव आयोग द्वारा उन्हें बल्ला निशान दिया है जिसमें जनता बटन दबाकर फिर से उन्हें सेवा करने का मौका का मौका देगी। जनता से अनुरोध करते हुए कहा की सब परिवार के जैसे हे, उनकी सेवा करना ही मेरा उपदेशीय है।

छत्रपति शिवाजी किड्स स्कूल में वार्षिक खेल का किया गया आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रावतपुरा कॉलोनी स्थित छत्रपति शिवाजी किड्स स्कूल में वार्षिक खेल का आयोजन किया गया। जिसमें सभी बच्चों ने अलग-अलग खेल का में भाग लिया। लेकिन एक खेल ऐसा है जो सभी की सोच से परे है। कक्षा श्रश्च2 के बच्चों ने उसे कर दिखाया।कक्षा पी पी टू के बच्चे बहुत ही छोटे होते हैं। इस उम्र में वे सिर्फ़ खेल-खेल में पढ़ना लिखना ही सीख पाते हैं। लेकिन रावतपुरा कॉलोनी स्थित छत्रपति शिवाजी किड्स स्कूल के बच्चों ने महज 5 साल की उम्र में ही शतरंज खेलना सीख लिया है। उन्हें शतरंज के मोहरों के चालो की पूरी जानकारी है। स्कूल की प्राचार्या श्रीमती अपर्णा कर्मकार के द्वारा उन्हें इस खेल को सिखाया गया है। इसमें बच्चों की रुचि भी इतनी बढ़ गई है कि जब भी लंच ब्रेक हो बच्चे खुद आकर बोलते हैं कि मैडम हमें शतरंज खेलना है। फोटो में पी.पी.टू के रुद्रांश पाल और आरोही प्रशर शतरंज खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में 8 ट्रेनें रद्द, यात्रियों को होगी परेशानी

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ में रेल यात्रियों की परेशानी रूकने का नाम नहीं ले रही है। आए दिन किसी न किसी वजह से ट्रेनें रद्द हो रही है। इसी बीच एक बार फिर रेलवे ने 8 ट्रेनों को रद्द कर दिया है। दरअसल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने ट्रैफिक और पावर ब्लॉक के कारण 2 से 5 फरवरी तक अपनी 8 ट्रेनें रद्द कर दी हैं। इसके साथ ही 2 अन्य ट्रेनों को उनके गंतव्य से पहले ही समाप्त कर दिया जाएगा। यह निर्णय बैकुंठ-सिलियारी सेक्शन में रिलीविंग गर्डर की डी-लांचिंग कार्य को पूरा करने के लिए लिया गया है।

ऑटो एक्सपो ने आयोजन का आधा पड़ाव किया पूरा, अब तक 12451 वाहनों की हुई बिक्री

टीवीएस राइडर सहित अन्य वाहनों की हुई लांचिंग

रायपुर (विश्व परिवार)। साइंस कालेज मैदान पर ऑटो एक्सपो के आयोजन को पखवाड़े भर बीत चुके हैं लेकिन हर दिन एक नयेपन का एहसास होता है। चारो सेग्मेंट में मौजूदा सारे माडल्स तो उपलब्ध है ही,रोजाना नए माडलों की लांचिंग भी हो रही है। हर दिन एक नया कस्टमर वर्ग भी पहुंच रहा है। बिक्री का नया रिकार्ड भी बन रहा है। किसी न किसी दिन मंत्री, विधायक, अधिकारी, कंपनी प्रतिनिधि, बैंकिंग अधिकारी ऑटो एक्सपो में पहुंचकर उत्साहवर्धन कर रहें हैं क्योंकि रायपुर का ऑटो एक्सपो ही एकमात्र ऐसा आयोजन है कि जो कि लगातार एक महीने तक के लिए हैं। छत्तीसगढ़ सरकार ने आजीवन रोड टैक्स पर 50 फीसदी की छूट देकर ऑटोमोबाइल इंडस्ट्रीज को एक बड़ी सौगात दी है जिसका फायदा हर कोई उठा रहा है। 30 जनवरी को 838 वाहन बिके जिससे अब तक कुल 12451 वाहनों की बिक्री हो चुकी है। न्यू लांच की श्रृंखला में आज टीवीएस राइडर की लांचिंग हुई। स्टेज प्रोग्राम का भी दर्शकों ने भरपूर आनंद उठाया।

रायपुर ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसियेशन (राडा) के अध्यक्ष श्री रविन्द्र भसीन, उपाध्यक्ष कैलाश खेमानी, सचिव विवेक अग्रवाल, कोषाध्यक्ष मुकेश सिंघानिया ने बताया कि ऑटो एक्सपो ने अपने आयोजन का आधा पड़ाव पूरा कर लिया है। इतने दिनों तक मिले रिस्पांश से सभी ऑटोमोबाइल डीलर्स उत्साहित हैं, आने वाला समय और बेहतर होगा इस उम्मीद से सभी अपने-अपने सेग्मेंट के वाहन बेंचने में लगे हैं।

जिम्नी का जलवा : भारत से लेकर जापान तक जलवा बिखेरने वाली मारुति सुजुकी जिम्नी रायपुर के आटो एक्सपो में भी धमाल मचा रही है। दरअसल इसकी खूबसूरत बनावट व कलर एक नजर में लोगों को आकर्षित कर लेती है। कंपनी का दावा है कि जिम्नी में 4-सिलेंडर नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन दिया गया है, जो 5-स्पीड मैनुअल और 4-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमेटिक गियरबॉक्स के ऑप्शन में आता है. इसका इंजन 105 बीएचपी की पावर और 134 एनएम का टॉर्क जनरेट करता है.इस एसयूवी में सुजुकी का ऑलग्रिप प्रो 4डब्ल्यूडी सिस्टम दिया गया है, जो मैनुअल ट्रांसफर केस, लो-रेंज गियरबॉक्स, 3-लिंक सस्पेंशन, टू-व्हील ड्राइव-हाई, 4-व्हील ड्राइव हाई और फोर व्हील ड्राइव लो मोड्स, इलेक्ट्रॉनिक ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, लेडर फ्रेम चेसिस के साथ आता है.

एमजी कॉमेट ईवी : ऑटो एक्सपो में कॉमेट ईवी को काफी पसंद किया जा रहा है। दरअसल कस्टमर स्टॉल पर पहुंचकर वाहनों की इंक्वायरी कर रहे हैं उससे पता चलता है कि वे अपने बजट का ई कार तलाश रहे हैं। फ्यूल की बचत के हिसाब से इसकी डिमांड बढ़ रही, ऐसा खुद एक्सपो में पहुंचे कस्टमर का कहना है। कॉमेट ईवी के फीचर्स और स्पेसिफिकेशंस काफी शानदार हैं। बैटरी भी पावरफूल है। एमजी कॉमेट ईवी जीएसईवी प्लेटफॉर्म पर बेस्ड है। इसे खासतौर पर शहरी यात्रियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। हालांकि, कार अपने कॉम्पैक्ट आकार के कारण थोड़ी नाजुक दिखती है। इसमें 12 इंच के पहियों के साथ टायर का आकार 145/70 है। फ्रंट में आपको डिस्क ब्रेक मिलते हैं जबकि रियर में ड्रम ब्रेक मिलते हैं।

टीव्हीएस राइडर की हुई शानदार लॉचिंग

ऑटो एक्सपो में न्यू लॉचिंग की श्रृंखला में आज टीव्हीएस राइडर की शानदार लांचिंग हुई। कंपनी प्रतिनिधियों ने बताया कि यदि आप स्टाइलिश व किफायती व्हीकल्स की तलाश कर रहे हैं तो यह आकर्षक व माडर्न डिजाइन में पेश किया गया है, जो कि युवाओं के लिए पहली पसंद बनेगी। चूंकि इसका माइलेज इंप्रेसिव हैं इसलिए यह किफायती विकल्प प्रदान करती है,जिससे बार-बार फ्यूल भरवाने की जरूरत नहीं होगी। इसमें कई एडवांस फीचर्स है। इसकी कीमत भी आपके बजट में आसान होगा। यह शहरी व हाइवे दोनों ही परिस्थितियों में शानदार परफार्मेंस देती है।

तरुण प्रकाश, महाप्रबंधक द.पू.म. रेलवे द्वारा बिलासपुर-ईब सेक्शन का विंडो ट्रेलिंग एवं ब्रजराजनगर स्टेशन का निरीक्षण

बिलासपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री तरुण प्रकाश ने आज बिलासपुर से ईब स्टेशन तक विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने रेल संचालन, संरक्षा और आधारभूत संरचना से संबंधित विभिन्न पहलुओं की गहन समीक्षा की।

निरीक्षण के क्रम में श्री तरुण प्रकाश ब्रजराजनगर स्टेशन पहुंचे, जहां उन्होंने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत चल रहे विकास कार्यों का अवलोकन किया। उन्होंने कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए और यात्री सुविधाओं के उच्चीकृत विकास पर विशेष जोर दिया।

इसके अलावा, महाप्रबंधक ने लज़कुरा ओपन कास्ट माइंस साइडिंग (LOCM) का निरीक्षण कर वहाँ माल परिवहन, लोडिंग सुविधा और संरचनात्मक सुधार की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कोयला परिवहन की सुचारू व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक सुधारों के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान श्री तरुण प्रकाश भालूमाड़ा सरदेगा क्षेत्र में भी पहुंचे, जहां उन्होंने चल रहे निर्माण कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने परियोजनाओं की गुणवत्ता और तय समय सीमा में पूर्णता पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान रेलवे के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं मंडल रेल प्रबंधक उपस्थित थे। महाप्रबंधक ने सभी अधिकारियों को यात्री सुविधाओं में वृद्धि, संरक्षा मानकों के पालन और संरचनात्मक विकास कार्यों में गति लाने के निर्देश दिए।

जयका ऑटोमोबाइल्स के कमर्शियल व्हीकल स्टॉल ने राडा ऑटो एक्सपो में मचाई धूम

रायपुर (विश्व परिवार)। टाटा मोटर्स व्यवसायिक वाहनों के छत्तीसगढ़ तथा मध्य भारत के सबसे पुराने तथा वृहत डीलरशिप जयका ऑटोमोबाइल्स एण्ड फायनेंस प्रा.लि. द्वारा वर्ष 2024 में अपनी स्थापना के गौरवशाली 70 वर्ष पूर्ण कर लिए गए हैं। वर्ष 1954 में स्थापित इस संस्थान ने स्थानीय साइंस कॉलेज ग्राऊण्ड में आयोजित राडा ऑटो एक्सपो 2025 में धूम मचा दी है। 15 जनवरी से 15 फरवरी तक आयोजित इस एक्सपो के कमर्शियल व्हीकल स्टॉल क्र. 01 को जयका ऑटोमोबाइल्स ने एक अलग सोच तथा नई थीम के साथ एक नया रंग दिया है।

संस्थान ने अपने स्टॉल को एक ''ढाबा'' की थीम पर रूपांतरित किया है, यहां ढाबा में रखी जाने वाली रस्सी की बुनाई वाली खाट, लकड़ी की बेंच, टेबल के साथ पेड़-पौधों की हरियाली भी उपलब्ध है। स्टॉल को सोलर लालटेन, झालर लाईट्स, रंगारंग तोरण तथा झंडे से आकर्षक तरीके से सजाया गया है, यहां स्टॉल में पधारने वाले ग्राहकगण यहाँ स्वादिष्ट कुल्हड़ चाय का आनंद लेते हुए खाट पर आराम से बैठकर अपने मनपसंद टाटा वाहनों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जयका ऑटोमोबाइल्स का यह कमर्शियल व्हीकल स्टॉल ऑटो एक्सपो में आकर्षण का केन्द्र बन गया है जहाँ ग्राहकगण न केवल अपनी आवश्यकता एवं बजट के अनुरूप टाटा वाहनों की विशाल रेंज के बारे में पूरी जानकारी पा सकते हैं तथा जयका समूह की प्रतिष्ठा एवं प्रारंभ से लेकर अब तक यात्रा का मानचित्र भी देख सकते हैं, जहाँ लकड़ी के टुकड़ों पर लिखा हुआ सफरनामा छत्तीसगढ़ में 1981 तथा मध्य भारत में 1954 से एक अलग ही विपणन नीति का मंत्र दर्शाता है। संस्थान के कुशल, दक्ष एवं अनुभवी सलाहकार ग्राहकों की हर जिज्ञासा का समाधान तत्काल कर रहे हैं।

नगरीय निकाय चुनाव-2025 : 7 जगह बिना वोटिंग बीजेपी की जीत

रायगढ़ के 2, भिलाई निगम से 1 कांग्रेस पार्षद प्रत्याशी ने नाम वापस लिया

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में नगरीय निकाय चुनाव में नाम वापसी का आज आखिरी दिन है। आज शाम तक चुनाव चिन्ह भी जारी हो जाएगा। 11 फरवरी को वोटिंग और 15 फरवरी को इसके नतीजे आ जाएंगे। लेकिन इससे पहले ही 7 जगह बीजेपी प्रत्याशियों की जीत हो चुकी है।

नाम वापसी के आखिरी दिन फिर कांग्रेस को झटके लगे हैं। रायगढ़ नगर निगम से 2 पार्षद प्रत्याशी और भिलाई से एक कांग्रेस कैंडिडेट ने नाम वापस लिया है। ऐसे में तीनों जगह बीजेपी कैंडिडेट को वॉकओवर मिल गया है। रायगढ़ में इस दौरान कांग्रेस-बीजेपी में विवाद के भी हालात बने।

महापौर पद के लिए 109, अध्यक्ष पद के लिए 816 कैंडिडेट हैं। पार्षद पद के लिए 10 हजार से ज्यादा लोगों ने नामांकन दाखिल किया है।

इससे पहले कल, धमतरी में कांग्रेस मेयर कैंडिडेट विजय गोलछा और विश्रामपुर नगर पंचायत में अध्यक्ष प्रत्याशी का नामांकन रद्द हो चुका है।

रायगढ़ नगर निगम के 2 बीजेपी पार्षद प्रत्याशी पूनम सोलंकी और नारायण पटेल को वॉकओवर मिला है।

पॉवर कम्पनी में ईडी आर.सी. अग्रवाल सहित 6 विद्युत कर्मियों की सेवानिवृत्ति

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज मुख्यालय में आयोजित समारोह में कार्यपालक निदेशक (पारेषण) श्री राजेश चंद्र अग्रवाल सहित 6 अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति के अवसर पर विदाई दी गई। प्रबंध निदेशकों ने श्री अग्रवाल के योगदान की प्रशंसा करते हुए उनके सुखद भविष्य की कामना की।

मुख्य समारोह का आयोजन डंगनिया स्थित सेवाभवन में हुआ जिसमें पॉवर ट्रांस्को के एमडी श्री राजेश शुक्ला एवं डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी (डिस्कॉम) के एमडी श्री भीमसिंह कंवर सहित वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे। सभी ने श्री अग्रवाल की कर्मठता और चार दशक की सेवा की सराहना की तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर प्रबंध निदेशकों ने कहा कि श्री अग्रवाल ट्रांसमिशन कंपनी में टेक्निकल एक्सपर्ट के रूप में जाने जाते है। उनेक मार्गदर्शन में रायपुर और बिलासपुर क्षेत्र के कई सबस्टेशन के निर्माण कार्य संपन्न हुए। वे टेस्टिंग और एमआरटी जैसे प्रमुख विभाग में अपना योगदान दर्ज करा चुके हैं। सेवानिवृत्ति एक नई पारी है। वे अपनी नई पारी में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। समारोह में सेवानिवृत्त ईडी श्री अग्रवाल ने अपने कार्य अनुभव बताते हुए अपनी सफलता का श्रेय टीमवर्क को दिया तथा सेवायात्रा के दौरान अधिकारी-कर्मचारियों से मिले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

इसी प्रकार लोड डिस्पैच सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में सहायक अभियंता (सिविल) श्री कृष्ण कुमार शुक्ला, अनुभाग अधिकारी श्री चमन लाल साहू, लाइन सहायक श्रेणी-1 श्री तुला राम कश्यप एवं श्री सनद कुमार वर्मा तथा वाहन चालक श्री एम. शंकर राव के योगदान का उल्लेख किया गया तथा सेवानिवृत्ति उपरांत प्रशस्ति पत्र के साथ उनका अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम में श्री के.एस.मनोठिया, श्री वी.के.साय, श्री एम.एस.चौहान, श्री संजय पटेल, श्री आर.ए.पाठक, श्री वी.के.दीक्षित, श्रीमती ज्योति नन्नौरे, जी.आनंद राव, श्रीमती कल्पना घाटे, श्रीमती शारदा सोनवानी, श्री एस.के.गजपाल, श्री मनोज राय, श्री पी.पी.सिंह, श्री एम.जामुलकर, श्री संदीप मोदी, श्रीमती नंदिनी भट्टाचार्य, श्री सुभाष शर्मा, श्री वाई.बी.जैन, श्री एफ.ए.खान एवं श्री के.बी.पात्रे उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त महाप्रबंधक (जनसंपर्क) श्री उमेश कुमार मिश्र एवं प्रकाशन अधिकारी श्री गोविंद सिंह पटेल द्वारा किया गया।

रेल परिवार से रायपुर मंडल के 19 सदस्य दिनांक 31/01/2025 को सेवानिवृत्त हुए

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल के विभिन्न विभागों में कार्यरत रेल परिवार के 19 सदस्य (10 सामान्य एवं 09 असामान्य) जनवरी 2025 में अपनी गौरवशाली रेल सेवा पूर्ण करने के पश्चात् सेवानिवृत हुए।

इस समारोह में मंडल कार्मिक अधिकारी (श्रीमती निकिता अग्रवाल), सहायक मंडल वित्त प्रबंधक (श्रीमती सुमित्रा पाल), सेवानिवृत्त कर्मी एवं उनके परिजन, कल्याण निरीक्षक तथा बंदोबस्त अनुभाग के कर्मचारी उपस्थित थे। मंडल के सेवानिवृत्त होने वाले 19 रेलकर्मियों में यांत्रिकी विभाग से 07, इंजीनियरिंग विभाग से 05, परिचालन विभाग से 02, विद्युत विभाग से 03, संकेत एवं दूरसंचार विभाग से 01 एवं चिकित्सा विभाग से 01 कर्मचारी शामिल है।

सामुदायिक भवन में आयोजित समारोह में समस्त सेवानिवृत्त कर्मियों को विदाई दी गई। इस अवसर पर सहायक मंडल वित्त प्रबंधक द्वारा सभी सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति का समस्त भुगतान प्रमाण-पत्र दिया गया। ई-पेमेंट के माध्यम से सेवानिवृत्त कर्मचारियों की कुल राशि रुपये 5,98,08,902/- का भुगतान किया गया। पेंशन भुगतान आदेश, सेवानिवृत्त कर्मचारी का पहचान पत्र एवं कर्मचारियों एवं आश्रितों का पास कार्ड, सेवा मेडल दिनांक 31/01/2025 को प्रदान किया गया।

मंडल कार्मिक अधिकारी एवं सहायक मंडल वित्त प्रबंधक ने सभी को संबोधित करते हुए सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सेवा के दौरान अपने दायित्यो का निर्वहन अच्छे से करने पर बधाई दी तथा स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए सेवानिवृत्त जीवन को अपने परिवार एवं रिश्तेदारों के साथ आनंदपूर्वक व्यतीत करने की बात कही, साथ ही सेवानिवृत्ति के दौरान मिली राशि को सही जगह निवेश करने की सलाह दी। अंत में उन्होंने सभी को सेवानिवृति के पश्चात् सुखद भविष्य एवं अच्छे स्वास्थ्य की शुभकामनायें दी।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354